CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री संस्कृत छात्रावास पुस्तकालय
धौ.पत्रि
25

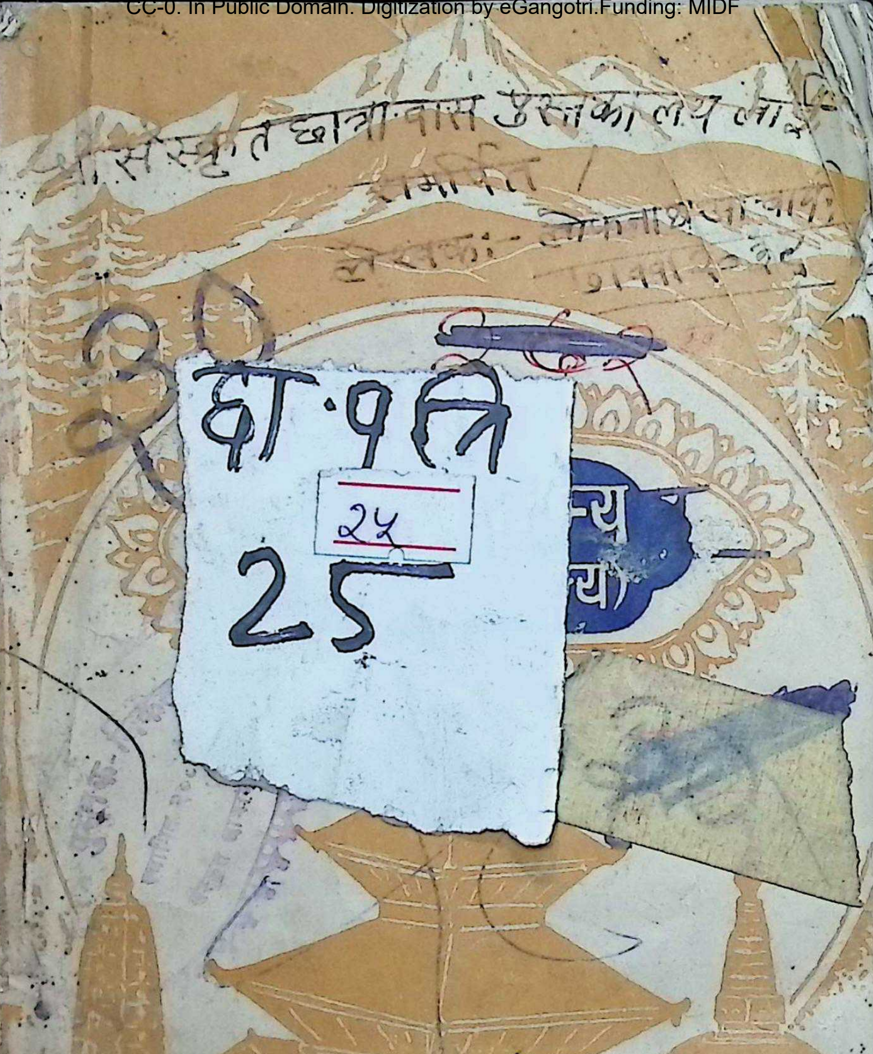

प्रकाशक :

रत्न पुस्तक भण्डार

भोटाहिटी, काठमाडौं, (नेपाल)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नेपाल महात्म्यम्

[अर्थात् पशुपति महिमा]

प्रस्तुतकर्ता

पंडित लोकनाथ आचार्य

हिन्दी भाषानुवाद

दुर्गाप्रसाद श्रेष्ठ

प्रकाशक

रत्न पुस्तक भंडार

काठमाडौं, नेपाल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशक
रत्न पुस्तक भण्डार
काठमाडौं, नेपाल ।

प्रथम संस्करण : विजया दशमी, २०३९

मूल्य : ने० रु० ५.८०
भा० रु० ४।–

मुद्रक
जंगबहादुर सिंह
मौर्य प्रेस एण्ड पब्लिकेशन्स
ख्वाजापुरा (जैतपुरा), वाराणसी ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३६२ ख

भूमिका

काशी में विश्वनाथ, प्रभास क्षेत्र में सोमनाथ, उज्जयिनी में महाकालेश्वर, सेतुबन्ध में रामेश्वर एवं विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न शिवलिंग स्थित हैं। नेपाल क्षेत्र में श्रीपशुपतिनाथ (ज्योतिर्लिङ्ग) स्थित हैं। जैसे प्रत्येक क्षेत्र का अपना-अपना अलग महात्म्य होता है, वैसे ही नेपाल क्षेत्र के देवी-देवताओं का भी अपना विशिष्ट महात्म्य है। इन महात्म्यों का वर्णन विभिन्न पुराणों में, यथाः वराह पुराण, पशुपति पुराण, हिमवत्खंड आदि हैं। समय अनुसार जनसाधारण में देवभाषा संस्कृत के ज्ञान का अभाव होने से पुराणों का अध्ययन भी कम होता गया; फलतः अपने विशिष्ट धार्मिक महत्व का ज्ञान भी लोगों में घटता गया। अतः जिज्ञासु श्रद्धालुओं को नेपाल क्षेत्र के विभिन्न देवी-देवताओं के महात्म्य का परिचय कराने हेतु विभिन्न पुराणों का सार-स्वरूप प्रस्तुत पुस्तक तैयार किया था। इसे हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने में हिन्दी-नेपाली भाषा के युवा लेखक दुर्गा प्रसाद श्रेष्ठ एवं प्रकाशन कार्य के लिए रत्न पुस्तक भण्डार सुयश के भागी हैं।

सुहृद् पाठकों को यह पुस्तक थोड़ी बहुत मात्रा में भी नेपाल क्षेत्र का धार्मिक महत्व का ज्ञान दिला सका तो मैं अपना परिश्रम सार्थक समझूँगा।

पं० लोकनाथ आचार्य
श्री पशुपति-देवपत्तन
स्वर्णपुरी।

महाशिवरात्रि, वि० सं० २०३६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छात्र पुस्तक निकेतन
मूल द. नं. ३०
दर्ता मिति २०४३।१०।२६
विभागीय दर्ता नं. ३०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३६२ ख

श्लेष्मान्तक वन तथा पशुपति उत्पत्ति

सभी पीठों में नेपाल महान् पीठ है एवं सभी क्षेत्रों में उत्तम क्षेत्र है। नेपाल क्षेत्र में अति प्राचीन काल से ही सुप्रसिद्ध, पवित्र नदी वाग्मति के तट पर अति मनोहर श्लेष्मान्तक नामक वन स्थित है।

इस वन में किसी समय 'श्लेष्मान्तक' नामक नाग निवास करता था। नागराज श्लेष्मान्तक गरुड़ से भयभीत होकर यहाँ तपस्या करता था। एकदिन भगवान् शंकर एवं भगवती पार्वती काशी क्षेत्र त्याग कर यत्रतत्र घूमते-घामते कैलाशमण्डल स्थित वाग्मति तटवर्ती इस अति मनोहर वन में आ पहुंचे। इस वन की शोभा-सौन्दर्य देखकर भगवान् शंकर एवं पार्वती मुग्ध हो गए और अपने समस्त गणों के साथ मृग-मृगिणी का रुप धारण कर यहीं विहार करने लगे। उन्होंने तपस्या कर रहे परमभक्त श्लेष्मान्तक नाग को कई बरदान दिए और कहा :

"इदंवनञ्च सिद्धाढयं पुण्यकृद्भिर्निवेषितम् ।
भविष्यति जगत् ख्यातं तव नाम्ना भुजङ्गमः ॥" (हि ख. २९ अ)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात्, सिद्धजनों से भरा, बड़े-बड़े पुण्यात्माओं द्वारा निवास किया हुआ यह वन, हे नाग! तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा।

इसी नागराज के विषय में जगदीश्वर शंकर ने कैलाश पर्वत पर निवास करते हुए अपने सेवक नन्दी से कहा था :

"पारे हिमवतः पुण्ये तपोवने गणैर्युतः ।।
तत्र श्लेष्मान्तको नाम वसते पन्नगोत्तमः ।।
सोऽनुग्राह्योमयाऽवश्यं तपसा दग्ध किलविषः।
तस्यनाम्नाच तत्स्थानं दिव्यं चिरतपोभृतम् ।।
श्लेष्मान्तक वनं नाम पुण्यशील शिलोच्चयम् ।।"

(वराहपुराण, अ. २१४)

हिमालय से दूर पवित्र तपोवन में अपने गणों के साथ श्लेष्मान्तक नामक नागराज तपस्या करता है, जिसके तप के प्रभाव से संपूर्ण पाप भष्म हो चुका है। अतः उसके प्रति मुझे अवश्य दया करनी चाहिए। उसके बहुत दिनों की तपस्या से वह वन परिपूर्ण है। उस वन का नाम भी श्लेष्मान्तक वन होगा। प्राचीन काल वह स्थान दिव्यं एवं पवित्र रहा है। वह स्थान पवित्र सिद्धाचल (गोरक्षनाथ पर्वत) और गौरी पर्वत (गुह्यकाली पर्वत) आदि से युक्त है।

वहाँ सिद्धाचल पर्वत पर गो रूपी धर्म-मार्ग का रक्षक (गो = इन्द्रिय, वृष=श्रेष्ठ) अर्थात् योग मार्ग द्वारा ब्रह्म-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लोक का दर्शन करने वाले, योगी गोरखनाथ जी का दर्शन करने से मनुष्य हज़ार गोदान का फल प्राप्त कर सकता है। यह बात शंकर भगवान् ने देवताओं से कहा थाः

"तत्र गोरक्षकं नाम गोवृष पदवीक्षितम् ।
आलोक्यंच पुमान् देवान् देवागो सहस्त्रफलं लभेत् ।।"
(हि. ख. अ. ८३)

ने मुनि ने विरूपाक्ष से कहा था :–

"पुनर्गोरक्षकं नाम गोवृष पदवीक्षितम् ।।
समालोक्य पुमान् श्रेष्ठो गोसहस्त्र फले लभेत् ।।
गोरक्षनाथः सिद्धोऽसौ योगेमात्र समाश्रितः ।।
मत्स्येन्द्रेण समंनित्यं चौरङ्गिषा तथापरैः ।।
त्रिरात्रं वसते तत्र तं गोरक्षं स्मरनुधिया ।।
योगीश्वरो भवेदाशु सिद्धदेहो भवेत्सदा ।।" (हि. ख. अ. १५१)

वहाँ सिद्ध गोरखनाथजी मत्स्येन्द्रनाथ तथा चौरङ्गीनाथ आदि सिद्धों सहित योग करते रहते हैं। उस सिद्धाचल क्षेत्र में तीन रात तक गोरखनाथजी का मन में ध्यान-अनुष्ठान करने से मनुष्य योगियों में श्रेष्ठ और अमर शरीर प्राप्त करता है।

इधर देवताओं को यह नहीं पता था कि भगवान् शंकर और भगवती पार्वती मृग-मृगिणी के रूप में श्लेष्मान्तक वन में विहार कर रहे हैं। शंकर पार्वती को कैलाश-काशी-देवलोक में नदेखकर देवताओं में हाहाकार मच गया। देवता-ऋषिगण सब क्या करें क्या न करें इस सोच-विचार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में पड़ गये। ब्रह्मादि देवता और नारदादि ऋषिगण, सभी मिलकर तीनों लोक में खोज करने लगे। नगर-ग्राम, वन; उपवन, नदी-पर्वत, सर्वत्र खोजा गया। लेकिन कहीं भी शंकर-पार्वती नहीं मिले। सब थक गए। तब ब्रह्मादि देवताओं ने शंकर का मन में ध्यान किया। और हिमालय की ओर चल पड़े। जाते-जाते सर्वोच्च हिमालय की तलहटी में वाग्मति तट पर स्थित श्लेष्मान्तक वन में पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर पुष्ट अंग, स्निग्ध, अति सुन्दर एक सिंग और तीन नेत्र वाले एक मृग को मृगिणी के साथ मृगों के झुण्ड में विहार करते देखा। सब आश्चर्यचकित हो गए। फिर उन्होंने मृग-रूपी शंकर भगवान् को पहचाना और उनकी स्तुति करने लगे। लेकिन शंकर भगवान ने मृग रूप को नहीं छोड़ा। तब ब्रह्मा, विष्णु, तथा इन्द्र ने एक सलाह किया। तीनों ने मृग का सिंग पकड़ उसे अपने वश में लाने की चेष्टा की। सिंग पकड़ते ही मृग उछलने कूदने लगा और सिंग के तीन टुकड़े हो गए। ब्रह्मा, विष्णु तथा इन्द्र के हाथों में सिंग का एक-एक टुकड़ा आ गया। साथ ही मृगरूपी भगवान् शंकर अन्तर्ध्यान हो गए। वे वाग्मति नदी के पश्चिम तट पर ज्योतिरूप में प्रगट हुए। ब्रह्मादि देवता वहाँ पहुँच कर ज्योतिरूप शंकर भगवान् की स्तुति करने लगे। उन्होंने शंकरजी को काशी या कैलाश में जाकर निवास करने की प्रार्थना की।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मादि देवताओं की प्रार्थना सुनकर भगवान् रूद्र कहते हैं :

"हे ब्रह्मादि देवता, इस अति रमणीय वन को छोड़कर मैं अन्यत्र कहीं नहीं जाऊँगा। मैं यहीं रहूँगा। चूँकि मैं यहाँ पशु रूप में रहा इसलिए मेरा नाम 'पशुपति' होगा। देवता वा मनुष्य, जो भी मेरा दर्शन करेगा, उसका पृथ्वीतल पर पशु योनि में पुनः जन्म नहीं होगा। मेरे हँसने से जिस पवित्र वाग्मति का जन्म महेन्द्र शिखर (वर्तमान शिवपुरी या वाग्द्वार पर्वत) से हुआ था, उसके दर्शन मात्र से मनुष्य पुण्य के भागी होंगे। जो पशुकुण्ड में स्नान कर मृगस्थली का प्रदक्षिणा करता है और किरातेश्वर शिवलिंग की पूजा करता है, वह मनुष्य संपूर्ण पापों से मुक्त होता है। ("कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी 'नरक चतुर्दशी' के दिन मृगस्थली का परिक्रमा करने वाला स्वर्गगामी होता है. ऐसी धारणा है। किरातेश्वर शिवलिंग स्थल पर माघ मास में मेला लगता है।)

फिर शंकर भगवान ने ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र को आज्ञा दिया कि मेरे सिंग का जो टुकड़ा तुम लोगों के हाथों में है, उसे शिवलिंग के रूप में अपने-अपने इच्छित स्थानों पर स्थापित कर देना।

वत्सला देवी

भगवान् पशुपति की बात सुनकर भगवती गौरी ने कहा,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"एतस्मिन्नन्तरे गौरीमहादेवमुवाचह ॥ वाग्मत्याः सरस्तीरे स्थास्यामितवसन्निधौ ।"

(हे प्रभो, मैं आपके सान्निध्य में ही वाग्मति तट पर निवास करूँगी !)

तब शंकर भगवान् ने कहा-हे गिरिजे ! एक अति गुप्त बात तुम्हें बताता है, सुनो। पूर्व जन्म में तुम 'सती' नामक दक्ष की कन्या थी। तुम्हारे पिता द्वारा मेरा अपमान किए जाने के कारण तुमने तत्काल ही प्राणत्याग किया और तुम्हारे स्नेहवश मैं तुम्हारे मृत शरीरको कंधे पर रख कर शोकाकुल भ्रमण करने लगा। समस्त पृथ्वीतल का भ्रमण कर जब मैं इस पवित्रतम भूमि में आ पहुँचा, विष्णु ने मुझे देखकर मेरे प्रेमवश होकर अपने सुदर्शन चक्रद्वारा तुम्हारे शरीर को खण्ड-खण्ड कर जगह-जगह गिरा दिया। तुम्हारा गुप्तांग मृगस्थलीके उत्तर की ओर वाग्मति नदी के तट पर पतन हुआ। इसलिए यह स्थल तुम्हारा परमपीठ है। वात्सल्य प्रेम के कारण तुम मेरे निकट रहना चाहती हो, अतः ठीक है, तुम 'वत्सला' नाम से पुकारी जाओगी। मेरी आज्ञा है, तुम मेरे आग्नेय दिशा में सदा के लिए निवास करो। जो मनुष्य वाग्मति के पवित्र जल में स्नान कर तुम्हारा दर्शन करने के पश्चात् मेरा दर्शन करेगा, वह अवश्य ही कैलाशपुरी को प्राप्त होगा। मेरे समीप, तुम्हारे समीप, अर्थात् गुह्येश्वरी के सन्निकट रह कर जो भक्तजन जप, पूजा-पाठ, ध्यान करेंगे उन्हें अवश्य सिद्धि प्राप्त होगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शंकर भगवान् के आज्ञानुसार पाशकीय बन्धन से मुक्त कर देने वाले उक्त सिंगको ब्रह्मा ने उत्तर दिशा में स्थित पवित्र एवं मनोहर नदी वाग्मति के तट पर स्थापित किया जिसका नाम गोंकर्णेश्वर महादेव पड़ा। यह शिवलिंग चन्द्रभागा नदी और वाग्मति के संगम पर स्थित 'ब्रह्माश्रम' के नजदीक है। ब्रह्मा ने इसकी स्थापना भाद्र कृष्ण चुतुर्दशी के दिन किया था। इस दिन इस स्थान पर पिण्डदान-श्राद्ध करने से पितरों को मुक्ति मिलती है। गोकर्णेश्वर में जो मनुष्य 'भृगु-पात्र' संपन्न करते हैं उनके सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।

इस स्थान पर निवास करते हुए ब्रह्माजी शंकर भगवान् की आराधना किया करते थे, इसलिए इसका नाम ब्रह्माश्रम पड़ा। मृगरुपी शंकर के श्रृंग को शिवलिंगरूप में स्थापना करने से इस का महत्व और भी बढ़ गया:

"गोकर्णाख्यं महालिङ्गं भक्तानां च वरप्रदम् ॥
ब्रह्मणा स्थापित पूर्वं मेतल्लिङ्गं च हारिणम् ॥" (हि. ख. अ. १४०)

वाग्मति तट पर स्थित गोकर्णेश्वर तीर्थ में स्नान करने वाला मनुष्य कैलास धाम को प्राप्त होता है:

"गोकर्णेश्वरतीर्थे हि स्नातो रुद्रालयं व्रजेत् ॥" (हि. ख. अ. १६०)

गोकर्णेश्वर तीर्थ के निकट ही चन्द्रभागा एवं वाग्मति के संगम पर पितामह तीर्थ स्थित है:

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"चन्द्रभागा नदी पुण्या वाग्मति च महानदी ।।
तयोश्च संगमे तीर्थे पैतामहेति विश्रुतम् ।।" (हि ख. अ. १४२)

इस पितामह तीर्थ को 'उत्तरगया' कहा जाता है । इस 'उत्तरगया' तीर्थ का महत्व 'दश गया' तीर्थ के पुण्य के बराबर होता है। यहाँ शास्त्रविधि अनुसार पिण्डदान करने से सौ गया में पिण्डदान करने का फल मिलता है तथा इक्कीस कुल का उद्धार होता है। भाद्र कृष्ण अमावस्या के दिन 'पितामह तीर्थ' अर्थात् 'उत्तरगया' में पिण्डदान (श्राद्ध) करने से अपने सवा सय कुल का उद्धार तथा स्वयं भी पितृलोक का अधिकारी होता है। वह ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है, जो मनुष्य 'विष्णुपादुका तीर्थ' में स्नान करके पिण्डदान करता है! वह अपने इक्कीस कुल का उद्धार करता है और स्वयं विष्णुलोक को प्राप्त होता है। यह विष्णुपाद तीर्थ गोकर्णेश्वर से उत्तर वाग्मति तट पर स्थित है। कहा गया है :

"दश गयासमं ज्ञेयं तद्भूमिस्पर्शमात्रतः ।।
पिण्डदानं शतगुणं तत्र चेद्विधिवत्कृतम् ।।
तत्र पिण्डदानाच्च त्रिसप्त प्रोद्धरेत्कुलम् ।।" (हि ख. अ. १४२)
"तथोत्तरगयातीर्थे स्नात्वा पिण्डं ददातिच ।
विशेषाद्भाद्रस्यामावास्यायां तस्यपुण्यफलंश्रृणु ।।
मातुः पितुस्तथा बन्धोः श्वसुरस्य कुलानि च ।।
समुद्धृत्य शतं साग्नं पितृलोक स गच्छति ।।
पितामह महातीर्थे स्नात्वा भक्तया हि मानुषः ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कोटिकुलं समुद्धृत्य ब्रह्मलोकं प्रगच्छति ।।
यो विस्णु पादुकातीर्थे स्नात्वा पिण्डं ददाति च ।।
त्रिः सप्तकुल मुदधृत्य विष्णुलोकं स गच्छति ।।" (हि. ख. अ. १६०)
"भाद्रमासे त्वमावास्यातिथौ गोकर्ण सन्निधौ ।।
ये पिण्डान् पातयिष्यन्ति तारयिष्यन्ति ते पितृ ।।" (ने.म अ. ११४५)

जिस प्रकार ब्रह्मा ने गोकर्णेश्वर शिवलिंग की स्थापना की है इसी प्रकार मृगरुपी शंकर के सिंग को विष्णु ने पाताल में ले जाकर स्थापित किया, जिसका नाम 'हाटकेश्वर महादेव' पड़ा। इन्द्र ने स्वर्ग में ज़ाकर स्थापित किया, जिसका नाम 'शृंगेश्वर महादेव' प्रसिद्ध है।

श्लेष्मान्तक वन में शंकर भगवान् भगवती पार्वती के साथ ज्योतिर्लिङ्ग रुप में विराजमान होने पर सभी देवतागण भी वहाँ रहने लगे। 'राढ़ा' देश (प्राचीन बंग देश का उत्तरी भाग) से आकर काली देवी यहाँ जयवागीश्वरी देवी के नाम से विराजमान हुई। त्रिपुरा से राजराजेश्वरी देवी आकर यहाँ बस गई। इनके दर्शन मात्र से दारिद्रय नाश हो जाता है। ये 'वत्सला' देवी के दक्षिण में स्थित हैं। राजेश्वरी तीर्थ में आश्विन शुल्क नवमी तथा आश्विन कृष्ण नवमी के दिन स्नान करने से मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

"राजेश्वरी महातीर्थे नवम्योराश्विने द्वयोः ।।
सप्त जन्मार्जितैः पापैः समुक्तो नात्र संशयः ।। (हि. ख. अ. १६०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वत्सला

श्री वत्सला देवीका प्राचीन स्थल आर्यतीर्थ आर्यघाट के दक्षिण में स्थित मन्दिर है। भगवान् शंकर ने उन्हें आग्नेय दिशा में वाग्मति के तट पर निवास करने का आदेश दिया था। तब से वे यहीं स्थित हैं। श्री वत्सला देवी की पूजा-आराधना करने से धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष ये चतुर्वर्ग पुरुषार्थ प्राप्त होता है। "पुरुषार्थान् वाप्नोति देवीं संपूज्य वत्सलाम्" (हि. ख. १५४ अ.)।

जयमंगला

वत्सलेश्वरी के सन्निकट दक्षिण की ओर आकाश भैरव तथा जयमंगला देवी का स्थान है। इनकी पूजाआराधना करने से सर्वत्र जय विजय प्राप्त होता है। "सर्वत्र जयमाप्नोति संपूज्य जयमंगलाम् ॥"

नन्दीभृंगी आदि पंच क्षेत्रपाल

नन्दी, भृंगी, लालगणेश, कीर्तिमुख भैरव और वासुकी,–इन पाँचो को शिवजी ने वरदान देकर उनका सम्मान बढ़ाने हेतु पशुपति क्षेत्र का क्षेत्रपाल बनाया। कीर्तिमुख दक्षिण दिशा में, नन्दी पश्चिम दिशा में, भृंगी उत्तर दिशा में, लालगणेश पूर्व दिशा में विराजमान होकर इस क्षेत्र की अद्यापी रक्षा करते हैं। सर्वप्रम इन क्षेत्रपालों का दर्शन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करना चाहिए, तब पशुपतिनाथ का दर्शन। इन क्षेत्रपालों का दर्शन किये बिना पशुपतिनाथ के दर्शनार्थी को पग-पग पर बाधा पहुँचती है। कहा गया है:

"ततः पशुपतिः क्षेत्रं नन्दीभृंगीगजाननान्।
यूयं रक्षथ मत्क्षेत्रं स्थिताद्वारेषु सन्ततम्॥
नापश्यन्नानमन् युष्मानायाति चेन्मदन्तिकम्।
विघ्नं ददतु यूयं वैतस्मै देवाः पदेपदे॥
प्रणम्यं गौरवाद्युष्मान्मां प्रपश्यति यो नरः।
गमिष्यति च मल्लोकं पशुजन्मानि मोचयन्॥" (हि. ख अ. १५७)

अर्थात्: भगवान् श्री पशुपतिनाथ नन्दी भृंगी आदि पाँच गणों को आदेश देते हैं कि तुम लोग चारों दिशाओं में रह कर मेरे इस क्षेत्र की रक्षा करना। तुम लोगों का दर्शन किए बिना मेरा दर्शन करने आने वालों को पग-पग पर बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। जो मनुष्य तुम लोगों का मान सत्कार पूर्वक दर्शन करके मेरा दर्शन करेंगे वे पशु-जन्म से मुक्ति पाकर शिवलोक के भागी होंगे।

वासुकी

मूल स्थान पाताल को छोड़कर अपने गणसहित, पशुपतिनाथ के प्रियस्थल श्लेष्मान्तक वन, वाग्मति तट पर--उत्तर दिशा में वासुकी नागराज विराजमान हैं। वासुकी नागराज का मंदिर सुप्रसिद्ध है।

एकदिन गरूड़ से भयभीत होकर वासुकी नागराज इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पवित्र भूमि में आए और उन्होंने वागमति में स्नान करने के पश्चात् एक हजार वर्ष तक तपस्या किया। उनकी तपस्या से भगवान् शिव प्रसन्न हुए और उन्होंने नागराज वासुकी को अपना गहना बनाकर गले में धारण किया। उन्होंने अनेक वरदान देते हुए नागराज से कहा :—

"अपरं रक्षको भूत्वातिष्ठ नागममान्तिके ॥
द्वारं निधि ममक्षेत्रं सर्वकालं प्ररक्षयन् ॥
प्रथमं न नमस्कृत्वा मद्वारि त्वां नराधमः ।
यः प्रविशति मांद्रष्टुं निष्फलं तस्य दर्शनम् ॥
त्वांपश्य मां प्रपश्यन्ति नरास्ते क्षीण किल्विषाः ।
तेभ्यो ददाम्यहं नागः भुक्तिमुक्ति हृदेप्सितान् ॥" (हि.ख १५७अ)

अर्थात्, हे नाग ! तुम सदैव मेरे द्वार पर रह कर मेरे खजाने, क्षेत्र की रक्षा करते हुए, रक्षक के रूप में मेरे साथ रहो। जो मनुष्य तुम्हारा दर्शन किए बिना मेरा दर्शन करेगा, उसका प्रयत्न व्यर्थ हो जायगा। जो तुम्हारी पूजा अर्चना कर मेरी पूजा करेगा, वह सभी पापों से मुक्त हो जायगा। मैं उसे भुक्ति मुक्ति और इच्छित वस्तु प्रदान करूँगा।

पुनः पशुपतिनाथ आज्ञा करते हैं:

"अतः पूर्वोत्तरे भागे वासुकीनामे नागराट् ॥
वृतोनाग सहस्त्रेण द्वारि तिष्ठति मेनिशम् ॥" (हि. ख. ८० अ.)
"सविघ्नं कुरूते नृषां मत्क्षेत्र विशतां सदा ॥
प्रथमं च नमस्कार्यस्ततो ऽहं क्रमशः पुनः ॥" (हि. ख. ८० अ.)
"तत्र पूर्वोत्तरे पार्श्वे वासुकिनाम नागराट् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृतोनाग सहस्त्रैपु द्वारि तिष्ठति मे सदा ।।
सविघ्नं कुरूते नृणां तत्क्षेत्रं विशतां सदा ।।
प्रथमं स नमस्कार्य स्ततो ऽहं तदनन्तरम् ।।" (वराहपुराण, २१५ अ.)

अर्थात् मेरे निकट उत्तर-पूर्व कोने में हजारों नागों सहित वासुकी नागराज मेरे द्वार पर हमेशा विराजमान रहते हैं। वह मेरे क्षेत्र में आनेवाले मनुष्यों के मार्ग में विघ्न-बाधा डालते रहते हैं। इसलिए पहले उनका दर्शन करके उन्हें प्रसन्न करना चाहिए।

गुह्येश्वरी

(गुह्येश्वरी क्षेत्र)

'गुह्येश्वरी' सती देवी का गुप्तांक पतन होने से बना प्रसिद्ध शक्ति-पीठ है। यह सर्वसिद्धि प्रदान करने वाली भगवती का प्राचीन एवं गुप्त स्थान है। यह स्थान ब्रह्मदेव के सृष्टिकालीन प्रथम स्थान होने और बाद में सतीदेवी के गुह्य-स्थान पतन होने के कारण अन्य शक्तिपीठों से उत्तम एवं महत्वपूर्ण स्थान माना गया है। 'कालिकापुराण' में कहा गया है :

"इन्द्र : देव्या रह-स्थान पुराणं सर्वसिद्धिदम् ।।
सतीगुह्य निपातेन ततोपि श्रेष्ठतांगतम् ।।"

इस पवित्र भूमि में इच्छित वर प्रदान करने वाली शिव की आद्या शक्ति गुह्यकाली सदैव विराजमान होती हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनेक तीर्थों एवं आश्रमों से परिपूर्ण मनोहर तपोवन होने के कारण अति पवित्र और प्रसिद्ध है । लिखा है :

"यत्राध्यास्ते शिवादेवी गुह्याख्या वरदानिशम् ॥
बहुतीर्थाऽऽश्रमंरम्यं तपोवन महत्तरम् ॥" (हि॰ ख. ७९ अ.)

स्वयं भगवान् शंकर ने कहा है कि सिद्धाचल पर्वत के ईशान कोण की ओर भक्तजनों को मोक्षादि प्रदान करने वाली मेरी मूर्त्ति स्वरुप मेरी शक्ति गुह्येश्वरी सदासर्वदा निवास करती हैं ।

"अतः पूर्वोत्तरे भागे गुह्येश्वरीतिनामतः ॥
मयामूर्तिश्च सा शक्तिर्भक्तानां मोक्षकृत्सदा ।" (हि ख. ८३ अ.)

वराहपुराण में स्वयं शिव देवताओं से कहते हैं ।

"गौर्य्यास्तु शिखरं तत्रगच्छेत् सिद्धिनिवेषितम् ॥
यत्र संनिहिता नित्यं पार्वती शिखरप्रिया ॥
लोकमाता भगवती लोकरक्षार्थमुद्यता ॥
तस्याः सालोक्यमायाति दृष्ट्वाऽभिवाद्यच ॥" (वराहपुराण अ. २१५).

अर्थात् शिखर में निवास करने वाली, समस्त लोक की माता, सकलऐश्वर्यसम्पन्न एवं सभी लोक की रक्षा करने वाली गुह्यकाली जहाँ विराजमान हैं, जहाँ बड़े-बड़े सिद्धजन सेवा करते हुए निवास करते हैं, उस 'गौरी-शिखर' में जाकर उन भगवती का दर्शन, स्पर्शन, पूजा-अर्चना करो । इससे 'सालोक्य मुक्ति' (देवीलोक में वास का फल) प्राप्त होता है ।

'देवीभागवत्' में कहा गया है :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"गुह्यकाला महास्थानं नेपाले यत्प्रतिष्ठितम् ॥ (दे. भा. स्कन्द-पुराण, ७ अ. ३८)

नेपाल में सर्वमान्या गुह्यकाली का जो पूज्य स्थल है, वह मेरा स्थान है ।

'ब्रह्माण्डपुराण' के 'ललितोपाख्यान-ललितासहस्त्रनाम' में 'पंचाशत्पीठरूपिणी' के भाष्य में भी भगवती क मुख्य पचास पीठों में 'गुह्यकाली पीठ' को प्रमुख पीठ माना गया है । इस स्थल पर कालीजी ने गुप्त रहकर शिवजी की सेवा की थी एवं कालीरुप सती देवी का गुप्तांग पतन होने के कारण इसका नाम 'गुह्यकाली' पड़ा है ।

गुह्येश्वरी के सामने वाग्मति में गुह्यकाली-तीर्थ है । यहाँ आश्विन शुक्ल नवमी के दिन स्नान करने से सभी कार्य निर्विघ्न पूर्ण होकर सिद्धि प्राप्त होती है ।

किरातेश्वर

श्री किरातेश्वर शिवलिंग काठमाडौं गौरीघाट से दक्षिण-पूर्व पहाड़ के शिखर पर गुह्येश्वरी से पश्चिम २५ धनु दूर स्थित है । यहाँ से १० धनु पश्चिम गौरीघाट में रूद्रसहस्त्र तीर्थ है । किरातेश्वर महादेव के संबध में ऐसी कथा है :

किसी समय की बात है, एक दिन पार्वतीको छकाने के लिए शिव ने किरात रुप लिया और यहाँ शिवलिंग की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थापना करके दस हजार वर्षों तक तपस्या की तथा किरातियों के साथ विहार किया। पार्वतीजी ने भी गुप्त रुप से किरातिनी का रुप लिया और शिवजी द्वारा स्थापित शिवलिंग की पूजा करते हुए किरातिनियों के साथ विहार करने लगीं। पार्वतीजी ने शिवजी को पहजान लिया था लेकिन शिवजी पार्वतीजी को नहीं पहचान पाए थे। किरातिनी स्वरुप पार्वती को देख वे दिन प्रतिदिन उनके प्रति आसक्त होते गए। इस तरह दस हजार वर्ष बीत गये। शिवजी ने आसक्त होकर एकदिन पार्वती से स्वयंवर का प्रस्ताव रक्खा। तब पार्वती जी ने मुस्करा कर अपना असली रुप प्रकट किया। यह देखकर शंकर भगवान् ने विस्मित होकर पार्वती से कहा– "तुम सचमुच ही महामाया हो!" फिर शंकर-पार्वती साथ श्लेष्मान्तक वन में विहार करने लगे। द्वापर के अन्त में अर्जुन ने यहीं आकर तपस्या किया। अर्जुन की परीक्षा लेने के लिए शिवजी जंगली बनैले का शिकार करने निकले। अर्जुन और शंकर दोनों का वाण बनैले को एकसाथ लगा और दोनों ही नें बनैले पर अपना अधिकार जताया। किरातेश्वर शिवजी ने अर्जुन को ललकारा। बाद में अर्जुन की वीरता से प्रसन्न होकर शिवजी ने उन्हें पाशुपतास्त्र प्रदान किया। महाभारत आदि पुराणों में भी इसका उल्लेख होने के कारण किरातेश्वर शिवलिंग का बड़ा महात्म्य है। जिस स्थल पर शिवलिंग स्थित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है उसे 'कील दवंत' भी कहते हैं। किरातेश्वर का दर्शन करने से अभीष्ट कामना की पूर्ति होती है। इस स्थान पर किया गया अनुष्ठान बहुत शीघ्र पूर्ण होता है। कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के दिन दर्शन-पूजन करने से शुकवक्त्र किरात मुक्त होने की कथा और विरूपाक्ष द्वारा वैशाख कृष्ण अष्टमी के दिन इनका दर्शन-स्पर्शन करके अभीष्ट प्राप्ति की कथा 'पशुपति पुराण' में भी वर्णित है। श्लेष्मान्तक वन में शिवजी ने मृगरूप लेकर विहार किया था, इसलिए इसका नाम 'मृगस्थली' भी है। अत्यन्त पवित्र स्थान होने के कारण ऋषि मुनि देवतागग श्री पशुपतिनाथ की सेवा करने वृक्षादि रूप में निवास करते हैं। शंकर जी देवताओं से कहते हैं :-

"असितं शयितं यातं भुक्त पीतं मृगेणमे ।
तत्र तत्र भवेत्सर्वं पुण्य क्षेत्रं हिसर्वतः ।। (हि. ख ८३ अ.)
मार्गकृष्ण चतुर्दश्यां मृगरूपं धृतंमया ।। (हि. ख. ८० अ)
मार्गकृष्ण चतुर्दश्यां शुद्धात्मा भक्तितो बुधः ।।
स्नात्वारोहति वाग्मत्यामारभ्य शंकरस्थलीम् ।।
मृगस्थली गिरिं भ्राम्य व्रीहीन् क्षिपति यत्नतः ।।
सुवर्ण रतिका तुल्यं व्रिहिकञ्चतत्फलम् ।।
पदे-पदेऽश्वमेधस्य फलं प्राप्नोति निश्चितम् ।।"

(हि ख. ८३ अ १५१)

अर्थात् मार्ग कृष्ण चतुर्दशी के दिन मैंने मृग का रूप धारण किया था, इस कारण इस दिन वाग्मति नदी में भक्तिपूर्वक स्नान कर शुद्ध मन से पशुपति से आरम्भ कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मृगस्थली पर्वत में जाकर दुःख सहते, प्रदक्षिणा करते हुए, धान्यादि अन्न छिड़कते हुए जो मनुष्य अनुष्ठान करता है, उसे कदम कदम पर अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है। एवं एक-एक रत्ति धान्यादि के बराबर सुवर्ण दान का पुण्य प्राप्त करता है।

मृगेश्वर

मृगेश्वर आर्यघाट में स्थित हैं। जिस स्थान पर मृगरूपी शिव विहार करते हुए वाग्मति का जल पान कर पश्चिम तट पर शीतल स्थान में विश्राम करते थे, उसी स्थान को 'मृगेश्वर' कहा जाता है। यह मृगेश्वर तीर्थ अति श्रेष्ठ एवं पवित्र है। यहाँ के अनादि शिव के मृगरूप का जो मनुष्य एक बार भी दर्शन करता है, उसे महान् पुण्य प्राप्त होता है।

"तत्राद्य' विद्यते शैवं पशुकलेवरं परम् ॥
सत्कृत्पश्यन्ति ये लोका स्तेषां पुण्य फलं महत् ॥
स्पर्शनादेव तं भक्त्या पशुजन्म न विद्यते ॥" (हि ख ७७ अ.)

'नेपाल महात्म्य' के १४ वें अध्याय में उल्लेख है :

"मृगोदकोद्भवे तीर्थे वाग्मत्याः पश्चिमे तटे ॥
जन्मान्तर कृतैः पापैर्मुच्यते नात्र संशय : ॥ ५१ ॥"

वाग्मति के पश्चिम तट पर पुण्य धारा के रूप में मृगतीर्थ स्थित है। यहाँ स्नान करने वाले मनुष्य का पूर्वजन्म का पाप स्वतः नष्ट हो जाता है। इसमें कोई शंका नहीं है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एक अन्य स्थान पर भगवान् शिव ने कहा है :

"तस्यास्तीरे जलोद्भ्रदेमन्मूलादभि निःसृतम् ॥
मृगश्रृंगोदकं नाम नित्यं मुनिजनप्रियम् ॥
तत्राभिषेकं कुर्वीत उपस्पृश्य समाहितः ।
यावज्जीवकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥"(वराहपुराण, २१५ अ.)

अर्थात् मेरे स्थान से निकल कर वाग्मति में संगमित मृगश्रृंगोदक नामक तीर्थ ऋषिजनों को अतिप्रिय है। इसमें आचमन स्थान-ध्यान करने से पूर्व जन्म का संपूर्ण पाप तत्क्षण ही नष्ट हो जाता है।

"मृगश्रृंगोदकं नाम परं तीर्थं भविष्यति ॥
संगमे विधिवत् स्नात्वा उपस्पृश्य यथाविधि ॥
यावज्जीवं कृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥
पशुयोनि जलं पीत्वा पशुयौनौ नजायते ॥
संस्पृश्य मत्तनुं धीरो ममलोकं व्रजिष्यति ॥ (हि. ख. अ. ८३)
"अन्येषा संगमानां च शंखमूले शतंगुणं ॥
स्नानाल्लभेत्फलं धीमांस्तस्माच्छ्रेष्ठं मृगोदकम् ॥
(हि. ख. अ. ८८)

"एकतः सर्वतीर्थानि एकतो वाग्मतिजलम् ॥
तुलया ब्रह्म विष्णुभ्यां धर्मदण्डेन तोलितम् ॥
तेभ्यः शतगुणं वाग्मति सलिलं गुरु ॥
तस्मादमि यवाधिक्यं मद्योनिजं सुदुर्लभम् ॥" (हि. ख. १६४ अ.)

अर्थात्, मेरे स्थान से निःसृत मृगश्रृंगोदक नामक तीर्थ महान् तीर्थ होगा। उसके और वाग्मति के संगम में विधिवत् आचमन तथा स्नान करने से जन्मजन्मान्तर का पाप नष्ट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हो जाता है। इस तीर्थ का जल पीने से पशु योनि में जन्म नहीं लेना पड़ता। मृगरूप मेरी मूर्तिको छूने से मनुष्य शिवलोक को प्राप्त होता है। मृगोदक तीर्थ का जल वाग्मति के जल से भी श्रेष्ठ हैं। यह परम दुर्लभ हैं।

खर्वरिका तीर्थ

मृगतीर्थ के सामने वाग्मति के पूर्वी तट पर खर्वरिका तीर्थ स्थित है। इस तीर्थ में स्नान करने से पार्वती जी प्रसन्न होती हैं।

"अत्र खर्वरिका नाम वाग्मत्याः पूर्वकेतटे ॥
तत्रापि च कृत स्नानात्पार्वती परितुष्यति ॥" (हि ख. ८० अ.)

मृगतीर्थ और खर्वरिका तीर्थ के संगम में आर्या तीर्थ स्थित है। यह तीर्थ नेपाल के सभी तीर्थों में अनादि तीर्थ है। मृगतीर्थ, खर्वरिका तीर्थ, और आर्या तीर्थ इन तीनों के संगम स्थल को 'त्रिवेणी' संगम कहते हैं। इस 'संगम' में वाग्मति के आ मिलने से इन स्थान की पवित्रता और श्रेष्ठता का वर्णन असंभव है, ऐसा भगवान् शंकर ने ब्रम्हादि देवताओं से कहा :

"तयोर्योगेन वाग्मत्यां तीर्थमार्याऽभिधानकम् ॥
सकृत्स्नात्वा शुनिःपापो ममलोकं गमिष्यति ॥" (हि ख. ८३ अ)
शतगंगा समंतीर्थं त्रिवेगा हरिवासरे ॥
तस्मा दृश गुणं ज्ञेयमार्या तीर्थं महत्तरम् ॥" (हि. ख. ८८ अ.)

मृगतीर्थ और खर्वरिका तीर्थ के मध्य वाग्मति संगम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में आर्या नामक तीर्थ है। इस तीर्थ में एक बार स्नान करने से मनुष्य तत्क्षण पाप से मुक्त हो जाता है और शिवलोक को प्राप्त होता है। हरिवासर के दिन शंखमूल में स्नान करने से गंगा स्नान का पुण्य प्राप्त होता है। शंखमूल में स्नान करने से दस गुना ज्यादा पुण्य सब तीर्थों में श्रेष्ठ आर्यातीर्थ में स्नान करने से प्राप्त होता है।

ने मुनि जी विरूपाक्ष को उपदेश देते हैं :—

"आर्यातीर्थे महापुण्ये त्रिवेणी संगमे शुभे ॥
स्नातव्यं सततं भक्त्या सर्वपर्वसु यत्नतः ॥
चतुरशीतिलक्षासु योनिष्वर्जित किल्विषैः ॥
स्नानाद्विमुच्यते सद्यः पूर्णिमायां विशेषतः ॥" (हि०ख० १६० अ)

अर्थात् महान् पुण्य देनेवाला, संपूर्ण रूप से कल्याण करनेवाला संगम रूप आर्यातीर्थ में भक्तिपूर्वक नित्य स्नान करना चाहिए। यदि ऐसा न कर सके तो कमसेकम मुख्य-मुख्य पर्वों में स्नान करे। ऐसा करने से चौरासी लाख योनि में किया हुआ समस्त पाप नष्ट हो जाता है। पूर्णिमा के दिन इस आर्यातीर्थ में स्नान करने से बहुत बड़ा पुण्य मिलता है। इसलिए पूर्णिमा के दिन आर्यातीर्थ में अवश्य स्नान करना चाहिए।

वासुकी तीर्थ तथा नारायण तीर्थ

आर्या तीर्थ से आगे वासुकी नागराज के पूर्व में वाग्मति के पश्चिमी तट पर 'वासुकी तीर्थ' और इसके सामने पूर्वी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तट पर (उस पार) 'नारायण तीर्थ' स्थित है। वासुकी तीर्थ में श्रावण शुक्ला पंचमी (नागपंचमी) के दिन स्नान करने से विशेष फल प्राप्त होता है।

सूर्यघाट

सूर्यघाट में 'सूर्यभागा तीर्थ' है। यहाँ रविवार, संक्रांति आदि सूर्य पर्वों में स्नान करना विशेष फलदायी होता है।

गौरीतीर्थ

आर्या तीर्थ से चार हात नीचे दक्षिण में गौरी तीर्थ स्थित है। इस गौरी तीर्थ के समान लोक में दुर्लभ और कोई तीर्थ नहीं है।

"गौरी तीर्थात्परं तीर्थं नास्तिलोके सुदुर्लभम् ॥"

(हि. ख. १६० अ.)

आर्या तीर्थ में श्राद्ध का महत्व

पशुपति क्षेत्र में आर्यातीर्थ में जो मनुष्य श्राद्ध करता है, अर्थात् पितरों को पिण्डदान करता है, वह अपने एक कोटि कुल का उद्धार करता है और मृत्यु के बाद शिवलोक को प्राप्त होता है।

"आर्यातीर्थान्तके योहि पिण्डं ददाति शांकरे ॥
कुलकोटिं समुध्दृत्य रुद्रलोके वसेत्सुखम् ॥" (हि ख. ७२ अ.)

वाग्मति (शिवगंगा)

श्री पशुपतिनाथजी ने ब्रह्मा को सृष्टि रचना करने की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आज्ञा दी। ब्रह्मा ने सभी स्थावर (अचल) जगत की सृष्टि की लेकिन प्राणी जगत की सृष्टि करने का ज्ञान उन्हें नहीं हुआ। तब उन्होंने मृगेन्द्र शिखर (वाग्द्वार पर्वत) में जाकर शिवजी को प्रसन्न करने के लिए तपस्या करना प्रारम्भ किया। ब्रह्मा के तप से शंकर भगवान् प्रसन्न हुए और प्रगट होकर जोर-जोर से अट्टहास करने लगे। अट्टहास करने से उनके मुख से जल का छींटा निकला। यही जल का छींटा नदी के रूप में परिणत हुआ। यह देख कर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हुए और उक्त नदी का नाम शिवगंगा या वाग्मति रखा। अन्त में नदी को अनेक वरदान देकर और ब्रह्मा जी की इच्छा पूर्ण कर अन्तर्ध्यान हो गए।

"मज्जिह्वाग्र समुद्‌भूता ततस्त्वं देवि वाग्मति ॥
भविता शिवगंगा त्वं मत्तः समुद्भवो यतः ॥
त्रेता द्वापर शेषेत्वं दिव्यवर्षशतं सति ॥
शिवगंगेति संमान्या सर्वलोकैः प्रपूजिता ॥
सर्वपर्वसु यत्नेन स्नात्वा त्वयि वरानने ॥
त्वत्तोयैर्मत्प्रियैर्योमा माभिषिञ्चति भक्तितः ॥
उद्धरिष्याम्यहं तं वै दुःख संसार सागरात् ॥" (हि. ख. ८६ अ.)

भगवान् शंकर कहते हैं :

मेरी जिह्वा के अग्र भाग से तुम उत्पन्न हुई हो, इसलिए तुम्हारा नाम 'वाग्मति' होगा। तुम मेरे द्वारा उत्पन्न हुई हो, अतः तुम्हारा नाम 'शिवगंगा' होगा। त्रेतायुग से लेकर द्वापर के अन्त तक तुम्हारा नाम 'शिवगंगा' ही रहेगा।

25

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुम सभी देवताओं की मान्य एवं पूज्य होओगी । सभी पर्वकाल में विधिपूर्वक तुम में स्नान कर तुम्हारे जल से जो मेरा अभिषेक करेगा, उसे मैं दुःखरूपी संसार से मुक्त करूँगा । इतना कह कर शिवजी अन्तर्ध्यान हुए । तब ब्रह्माजी ने वाग्मति को आशीर्वाद दिया :—

"यतो रूद्रमुखोद्भूता वाग्मतीनि वदिष्यति ॥
कलेः पंचसहस्त्रान्ते सुरसरिद् भविष्यसि ॥
त्रिंशद्वर्ष सहस्त्राणि नृणां कलौही वाग्मति ॥" (हि. ख. ८३ अ.)

अर्थात्, तुम शिव के मुख से निकली हो, इसलिए लोग तुम्हें वाग्मति कहेंगे । मनुष्यमान से कलियुग का पाँच हजार वर्ष व्यतीत होने पर तीस हजार वर्षों तक तुम इस पृथ्वी में रहोगी । इसके पश्चात् तुम सुरसरित (स्वर्गंगा) हो जाओगी । ब्रह्मा के इतना कहने पर महाविष्णु को वाग्मति का पता चला और वे वाग्मति के स्थान पर आये । वाग्मति को देखकर विष्णु अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने कहा :—

"त्रेता द्वापरयोर्मध्ये त्रिशब्दर्षसहस्त्रकम् ॥
ब्रह्म सरस्वती गंगा वाग्देवी त्वं भविष्यसि ॥" (हि०खं० ८६ अ.)

अर्थात्, हे वाग्मति ! तुम त्रेतायुग और द्वापर युग के बीच तीस हजार वर्षों तक ब्रह्म-सरस्वती-गंगा के नाम से पूजित होओगी ।

इस तरह ब्रह्मा, विष्णु, महेश ने वाग्मति को सर्वत्र परम पवित्र, लोक का सम्पूर्ण काम (इच्छा) पूर्ण करने

Balmiki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाली, धर्म-अर्थ-मोक्ष को प्रदान करने वाली होओगी; ऐसा वरदान दिया। तत्पश्चात् ब्रह्मा के मुखारविन्द से वाग्मति का वर्णन सुनकर अनेक देव-देवता, ऋषि-मुनि आदि आकर वाग्मति में संध्या-स्नान करने लगे, और उन्हें सिद्धि प्राप्त होती गई। बड़े-बड़े पापियों का भी उद्धार हुआ। इस प्रकार वाग्मति विश्व में प्रसिद्ध हो गयीं। इसके महात्म्य वर्णन में शिव ने ब्रह्मा-विष्णु से यों कहा है :—

"नास्ति येषां गतिः क्वापि तेषां हि सा गतिर्ध्रुवम् ॥
मम शक्तिः परा देवी वाग्मतीत्यभिधीयते ॥" (हि. ख. ८६ अ.)

अर्थात् अन्य तीर्थों में जिन पापियों का उद्धार नहीं होता है, उनका उद्धार वाग्मति में होता है, क्योंकि मेरी आदिशक्ति ही वाग्मति के रूप में प्रगट सें हुई हैं। इसी प्रकार 'नेपाल महात्म्य' के प्रथम अध्याय में शिव ने शंखासुर को कहा हैः "मेरे मुख से निकलने के कारण इसका नाम वाग्मति पड़ा। कहीं का भी मनुष्य वाग्मति में स्नान करने पर मेरा स्वरुप प्राप्त करेगा, इसमें शंका नहीं है।'

"यत्र कुत्रापि कुर्वन्ति वाग्मत्यां ये जलाप्लवम् ॥"
मूर्तयोमे भविष्यन्ति स्नातकास्ते न शंसयः ॥" (हि. ख. अ ४७)

वाग्मति-महात्म्य के बारे में एक अन्य स्थान पर वर्णित है :—

'वाग्मत्याः सलिलेस्वकीय चरणौ संपृश्य रोगार्दितः
प्राणैः कण्ठगतोऽपि पामरजनोमुञ्चन्त्य सूनत्तत्ढे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोऽन्ते योग सुगम्यमान पदवीं प्रोप्तातित हृद्यं शिवः
वाछन्ति त्रिदशाःहि तादृशगतिं धीराः जनाः किं पुनः ।।"

स्कन्द·पु (हिमवत्खंड)

अर्थात् रोगग्रस्त और प्राण गले में अटके अत्यन्त पापी होने पर भी वाग्मति के जल में अपने दोनों पैरों को डुबो कर प्राणत्याग करने पर वह अन्त समय में योगसाधन द्वारा प्राप्त अतिप्रिय शिवगति प्राप्त करता है। उस प्रकार की गति की चाहना देवता भी करते हैं। फिर धैर्यशाली पुरुष क्यों चाह न करें ? अर्थात् अवश्य चाहते हैं।

मृगरूप शिव ने ब्रह्मा-विष्णु-इन्द्र से कहा : 'मेरे मूल क्षेत्र (वाग्मति) में स्नान करने वाला नारायण होता है। वाग्मति के जल में स्नान करने वाले मनुष्य महापापी होने पर भी मनुष्य-शरीर छोड़ने के बाद मेरे लोक को प्राप्त होते हैं। इसमें शंका नहीं है। कलि के पाँच हजार वर्ष बीत जाने पर वाग्मति गंगा होगी।'

"वाग्मत्या किल मत्क्षेत्रे स्नातो नारायणो भवेत् ।।
वाग्मति सलिले स्नाता महापातकिनोऽपिवा ।।
त्यक्त्वा देहं नरायान्ति ममलोकं न संशयः ।।
पञ्चवर्ष सहस्रान्ते सा हि गंगा भविष्यति ।।" (हि. ख. ८३ अ.)

श्रीकृष्ण भगवान् ने देवताओं से कहा है : 'कलियुग लगने पर वाग्मति सौ गंगा के समान सर्वपूज्या होगी।'

"शतगंगा समाज्ञेया कलौ प्राप्ते हि वाग्मति ।।" (हि०ख०१८१ अ.)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाग्मति में स्नान करने वाला मनुष्य पशुपक्षी की योनि में नहीं जन्म लेता है।

"हिमाद्रेस्तु ग शिखरा ह्योद् भूतावाग्मती नदी ॥
भागीरथ्याः शतगुणं पवित्र तज्जलं स्मृतम् ॥
तत्र स्नात्वां हरेर्लोकानु स्पृश्य दिवस्पतेः ॥
मुक्तवादेहं नरायन्ति ममलोकं न संशयः ॥
वाग्मति सरितां श्रेष्ठा यत्र यत्राऽवगाह्यते ॥
तत्र तत्र फलं दद्या द्राजसूयाश्वमेधयोः ॥
यत्र यत्र च वाग्मत्यां स्नाति वै मानवः सुचिः ॥
तिर्यग्योनिं नगच्छेत्तु समृद्ध जायते कुले ॥"

(वराहपुराण, २१५ अ)

अर्थात् हिमालय के उच्च शिखर से उत्पन्न वाग्मति नदी का जल गंगा के जल से सौ गुना पवित्र है। इसमें स्नान करने से वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है। आचमन करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। और मरने के बाद शिवलोक की प्राप्ति होती है, इसमें कोई शंका नहीं है। सभी नदियों में श्रेष्ठ वाग्मति नदी में नहाने से नहाने वाले व्यक्ति को राजसूय और अश्वमेध यज्ञ करने का पुण्य प्राप्त होता है। मन को पवित्र रख कर जो मनुष्य वाग्मति में स्नान करता है, उसे पशु योनि में पुनः जन्म नहीं लेना पड़ता।

वाग्मती शिवगंगा, ब्रह्मसरस्वती

"नाभिकुण्ड समुद्भूतं यत्तोयं शंकरस्य च ॥
जिह्वाग्राज्जल रुपेण पपात गिरिगह्वरे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाग्मति शिवगंगेति सा वै ब्रह्म-सरस्वती ।।"- (हि. ख. ८७ अ.)

शिव के नाभिकुण्ड का जल जीभ के अग्रभाग से हिमालय के गुहा में गिरा; उसी जलमय नदी को वाग्मति, शिवगंगा, ब्रह्मसरस्वती, इत्यादि नाम से जाना-पूजा जाता है। वाग्मति में स्नान करने वाले मनुष्य को निम्नलिखित श्लोक का पाठ करना चाहिए :—

"वागीशे वाग्भवे वाणि: भारती भवहारिणी ।।
वाग्विभूति भवे शनि भवप्रिये नमोऽस्तुते ।।
नमस्ते देवि वाग्मत्यै सर्वदुष्कृतनाशिनी ।।
अद्य मे धूलितं पापं त्वद्दर्शनाश्चिरार्जितम् ।।"

वाग्मति-यात्रा कहाँ से प्रारम्भ करना चाहिए ? विरूपाक्ष के इस प्रश्न के उत्तर में ने मुनि का उत्तर इस प्रकार था:

"सेतुभिन्नं महातीर्थं भारम्य स्नायतां द्विज ।।
आवाग्मत्युभ्दव यत्नात्तत कामँलभिष्यसि ।।" (हि ख १४८ अ.)

अर्थात् सेतुभेद तीर्थ (नागदह के निकट का तीर्थ) से आरंभ करके वाग्द्वार पर्वत तक अर्थात् वाग्मति के उद्गम स्थान तक विधिपूर्वक भक्ति भाव से स्नान करने से मनोवांछा पूर्ण होती है। मेष संक्रांति के दिन वाग्मति का जन्म हुआ था, इस दिन वाग्द्वार में स्नान करने से भारी पुण्य प्राप्त होता है।

शंखमूल

किसी समय शिवजी को प्रसन्न करने के लिए ब्रह्माजी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मणिचूड पर्वत (मनोहरा नदी के शिर्ष पर स्थित पर्वत) पर एक अति सुन्दर तालाब निर्मित कर उसके तट पर रत्नादि जड़ कर अपनी कारीगरी से सुन्दर बनाया। फिर वहाँ रह कर शिवजी को प्रसन्न करने तपस्या करने लगे। कुछ काल के पश्चात् उक्त कुण्ड के बीच में मणिमुकुटादि धारण किए हुए शंकर भगवान प्रगट हुए। ब्रह्माजी की तपस्या, कुण्ड की शोभा, और कारीगरी देखकर प्रसन्न होकर शिवजी सिर हिलाहिला कर प्रशंसा करने लगे। इससे उनके जटाजूट से गंगाजी का पानी उस कुंड में गिरा और कुंड से जल प्रवाहित होने से मणिमति (मनोहरा) नदी का जन्म हुआ।

बलि दैत्य के वज्रनाभ, दानासुर, और शख नामक तीन पुत्र थे। इनमें से शंख ने वाग्मति और मणिमती के संगम में शिवजी को प्रसन्न करने के लिए बहुत काल तक तपस्या किया। शिवजी प्रसन्न होकर उसे वर देने प्रगट हुए। वहाँ की शोभा देख कर उक्त उत्तम तीर्थ को वरदेने ही वाले थे कि पाताल स्थित भोगावती गंगा मौका देखकर शिवजी का पैर धोने के लिए शंखाकार रुप में प्रगट हुई और शिवजी का पैर धोने लगीं। तब इसका नाम 'रुद्रधारा' पड़ा।

"तत्र पातालगंगा सा उर्ध्वे निःसृत्या चाययौ।
स्नापनाय पादुकां भक्त्या शिवस्य मुदिता तदा॥" (हि· ख.८७अ)

आज भी यदाकदा शंखाकार रुद्रधारा का पानी संगम में दिखाई देता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शंकरजी ने शंखासुर को अनेक वर प्रदान किया और उक्त तीर्थ को भी वर देकर अन्तर्ध्यान हुए। उसी दिन से इस तीर्थ में ऋषि-मुनि आकर स्नान तप आदि करने लगे और सबका मनोरथ पूर्ण होने के कारण तीर्थ की प्रसिद्धि चारों तरफ फैली ! शंख के आकार में भोगावती गंगा के प्रगट होने के कारण एवं शंखासुर के तप के कारण इस तीर्थ की प्रसिद्धि होने के कारण इसका नाम 'शंखमूल' पड़ा। यह तीर्थ नेपाल के तीन प्रसिद्ध तीर्थों में एक है।

इसका महात्म्य-वर्णन इस प्रकार है :—

"शंखमूल महातीर्थं सर्वतीर्थोत्तमोत्तम् ॥
महापातकिनो यत्र प्रमुच्यन्ते जलस्पृशः ॥
रुद्रधारा च पातालगंगा ज्ञेयाऽघहारिणी ॥
मणिमति तथा ज्ञेया व्योमगंगा सुखप्रदा ॥
भागीरथी तथा श्रेष्ठा वाग्मति च महानदी ॥
शंखमूलं महातीर्थं त्रिगंगा संगमोयतः ॥" (हि. ख. १४५ अ.)

"तासां च संगमे तीर्थं शंखमूलमुदाहृतम् ॥
तिस्रः कोट्यर्ध कोटीनां पवित्र परमं कलौ ॥
शंखमूल समंतीर्थं नास्ति नास्ति धरातले ॥
शतगंगा समं ज्ञेयं शंखमूलं महाफलम् ॥"(हि. ख. ८७ अ.)

संपूर्ण तीर्थों में शंखमूल तीर्थ अति उत्तम तथा महान तीर्थ है जिसके जल के स्पर्श मात्र से महापातकी भी मुक्त हो जाता है। जहाँ सर्वसुख प्रदायिनी मनोहरा-आकाशगंगा हैं, संपूर्ण नदियों में श्रेष्ठ भागीरथी वाग्मति हैं,—इन तीन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नदियों के संगम से होने के कारण शंखमूल महान् तीर्थ है। कलियुग में यह तीर्थ, साढ़े तीन करोड़ तीर्थों में अति पवित्र तीर्थ है। यह तीर्थ सौ गंगा के समान पुण्य देने वाला है। इस तीर्थ के समान पवित्र दूसरा तीर्थ इस धरती पर नहीं है, नहीं है।

हिम्वत्खण्ड अध्याय १८१ में भगवान् श्रीकृष्ण देवताओं से कहते हैं: सौ गंगा के समान शंखमूल में स्नान करने से गो-विप्र, बाल वृद्धादि संपूर्ण पाप से मुक्त हो जाते हैं। अर्थात् सभी पाप छूट जाते हैं। इस शंखमूल तीर्थ को भगवान् शंकर ने वर देकर अति श्रेष्ठ बनाया है। इसे शिवतीर्थ भी कहा जाता है।

"वाग्मतिरुद्रधारा च मणिमति नदी वरा ।।
तासां च संगमे पुण्यं शिवतीर्थं मुदाहृतम् ।।" (हि. ख. ८७ अ.)
"वाग्मत्या मणिमत्याश्च संभेदे रुद्रधाऱ्या ।।
स्नायते विधिवद् भक्त्या सर्वैनोभिर्विमुच्यते ।।
शंखमूले तु स्नानाय संकल्प्य गच्छतः पथि ।।
पदे-पदे फलंतस्य वाजपेयाऽश्वमेधयोः ।।" (हि ख ८० अ.)

शंखमूल तीर्थ में भक्तिपूर्वक तथा विधिपूर्वक स्नान करने से संपूर्ण पापों से मुक्ति मिलती है। इस तीर्थ में स्नान करने का संकल्प लेकर घर से प्रस्थान करने वालें को पग-पग पर अश्वमेध तथा वाजपेय यज्ञ का पुण्यफल प्राप्त होता है। हि० ख० १४६ अध्याय में वाग्मति ने ब्रह्मपिशाच से कहा है:

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"नवोत्तर प्रयागः स्यादत्र नः संगमे शुभे ।।
फलदं तीर्थकोटिनां कलौप्राप्ते विशेषतः ।।
नह्यूत्तर प्रयागेवा समं तीर्थं हि विद्यते ।।
त्रिषुलोकेषु सिद्धार्थ विशेषेण कलौध्रुवम् ।।" (हि. ख. १४६ अ.)
"बालुकाभि सुनिर्माय लिंगचर्मयति वै सकृत् ।।
इह लोके सुखं भुत्त्वा व्रजेदन्ते परात्परम् ।।" (हि. ख. १५९ अ.)

अर्थात् हमें मंगल प्रदान करने यह नया उत्तरप्रयाग बना है। करोड़ों तीर्थ का फल देने वाला यह तीर्थ कलियुग में विशेष प्रकार का होगा। हे ने मुनि ! इस तीर्थ के समान दूसरा तीर्थ, विशेषकर कलि में, नहीं होगा। इस स्थान पर बालू का शिवलिंग बनाकर पूजा करने से भी इस लोक में सुख भोगता हुआ अन्त में ब्रह्मपद प्राप्त होता है।

हिमवत्खंड १५९ अध्याय में लिखा है—वह तीर्थ उत्तर प्रयाग है। यहाँ वैशाख, कार्तिक, माघ और अन्य सभी पर्वों में, विशेषतया मकर संक्रांति से महिना भर या एक दिन भी स्नान करने से विशेष फल प्राप्त होता है।

वराहपुराण अध्याय २१५ में भी लिखा गया है :

"वाग्मत्या मणिमत्याश्च संभेदे पापनाशने ।।
अहोरात्र वसे, घस्तु, रुद्रजापो द्विजः शुचिः ।।
तारितं च कुलं तेन सर्वंभवति साधुना ।।
गंगाद्वारे तु यत्प्रोक्तं स्नान पुण्य फलंमहत् ।।
स्नानस्य तद्दशगुणं भवेदत्र न संशयः ।।
वर्णावरोपि यः कश्चित्स्नात्वा दद्यात्तिलोदकम् ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तर्पिता: पितर स्तेन भवेयुर्नात्र संशयः ॥
स्वल्पमप्यत्र यत्किञ्चिद्द्विजेभ्यो दीयतेधनम् ॥
तद्क्षयं भवेद्दातुर्दानं पुण्य फलं महत् ॥

अर्थात् पवित्र शंखमूल में जो जो ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य अथवा कोई भी मनुष्य पवित्र होकर अहोरात्र रूद्री पाठ अथवा शिवमंत्र जप करता है, वह अपने समस्त पितरों का उद्धार करता है। गंगा में स्नान करने का जो फल मिलता है, उसका दस गुना फल यहां स्नान करने से मिलता है। इसमें कोई शंका की बात नहीं है। यहाँ कोई नीच व्यक्ति भी स्नान कर तिलांजलि (तर्पण) करता है तो निस्सन्देह वह अपने समस्त पितरों को तृप्त करता है। यहाँ थोड़ी मात्रा में भी धन-द्रव्य ब्राम्हणों को दान करने से अक्षय दान का फल प्राप्त होता हैं।

टेकु-संगम

"वाग्मत्या विष्णुपद्याश्च संभेदे देव-सेविते ॥
तीर्थं पञ्चनदे नाम्नि स्नाता यास्यति शाङ्करम् ।:"

(हि. ख. ८० अ.)

अर्थात् महाविष्णु के पैर से निकली विष्णुमती और वाग्मति के संगम पर पंचनद नामक तीर्थ है। यहाँ स्नान करने से शिवपद (कैलाश) प्राप्त होता है।

मूलक्षेत्र

नेपाल महाक्षेत्र के अन्तर्गत अनेक पुण्यक्षेत्र हैं। इनमें 'मूलक्षेत्र' प्रमुख है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाग्द्वार पर्वत स्थित कूटेश्वर से लेकर दक्षिण तिलेश्वर तक का क्षेत्र संपूर्ण इच्छाओं को पूर्ण करने वाला क्षेत्र है। (तिलेश्वर शिवलिङ्ग, ललितपुर के लेले ग्राम में स्थित है। यह स्थान गुप्तेश्वर से १ योजन ईशान कोण में है। यहाँ से २०० हाथ वायव्य कोण में मनोमती, प्रभावती, सरस्वती का संगम है। यहीं पर मनः श्रोतीर्थ, भृगुकुण्ड, रूद्रकुण्ड, रूद्रगंगा, सरस्वती कुंड आदि हैं। यहीं वृहस्पति ने ध्यान-तप किया था और सरस्वती उन पर प्रसन्न हुई थीं। मकर संक्रांति के दिन इन देवताओं का दर्शन-पूजन करने का विधान है। विरूपाक्ष ने माघ कृष्ण ११ के दिन दर्शन पूजन किया था। इसका प्राचीन नाम 'मुकुन्द पर्वत' है।)

हिम्वत्खंड अध्याय ७१ में उक्त वाग्द्वार से लेकर तिलेश्वर तक के क्षेत्र का 'कामदा' नाम दिया है :—

"मृगेन्द्र शिखरे संस्थ कूटेश्वराच्च याभ्यतः :।
आ तिलेश्वर पर्यन्तंज्ञेया सा कामदा क्षितिः ॥"

विकटेश्वर : ये देवता भक्तपुर धनेश्वर से ६ हजार धनु पश्चिम में स्थित हैं। माघ कृष्ण तृतीया के दिन इनका दर्शन पूजन करने से 'विकट' नामक म्लेच्छ मुक्त हुआ था। विरूपाक्ष ने माघ कृष्ण सप्तमी के दिन दर्शन पूजन किया था। इस स्थान का नाम द्रोणाचल पर्वत है। यहाँ से पश्चिम 'चन्दन भराटेश्वर' स्थित हैं। यह क्षेत्र भी उत्तम माना गया है। कहा गया है :—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"विकटेशान्महार्लिगात्पूर्वं देशाद्धि वारुण ॥
आचन्दन भटारान्तं ज्ञेयं क्षेत्रोत्तमोमम् ॥" (शक्तिसंगम तंत्रे, देशव्यवस्था प्रकरणे)

जलेश्वर सभारभ्य योगिन्यन्तं महेश्वरी ॥
नेपालदेशो देवेशि शिलहद्द शृणुप्रिये ॥"

जलेश्वर : गुहेश्वरी स्थान से ईशान गुह्येश्वरी घाट पीपल वृक्ष के नजदीक वाग्मति क्षेत्र में पर्वतेश्वर से ४०० धनु पूर्व में जलेश्वर तीर्थ स्थित है। यह वाग्मति के आराधना करने से उत्पन्न हुआ था। वाणासुर पुत्र त्रिशंकु दैत्य ने नारद के उपदेशानुसार कार्तिक शुक्ल अष्टमी के दिन दर्शन पूजन कर गोहत्या के पाप से मुक्ति पाई थी। विरुपाक्ष ने वैशाख शुक्ल त्रयोदशी के दिन दर्शन किया था। 'उमाशैल' से वज्रयोगिनी तक का क्षेत्र सर्वोत्तम है।

"योगधारा नदी श्रेष्ठा तस्याश्चेशानतः पुनः ॥
आ विष्णु तीर्थ पर्यन्त तत्क्षेत्रं मोक्षदायकम् ॥"

वज्रयोगिनी से लेकर गोकर्ण स्थित विष्णुतीर्थ तक का क्षेत्र मोक्षदायक तीर्थक्षेत्र है।

गोदावरी से लेकर बूढानीलकण्ठ अथवा फर्पिंग तक का चतुर्दिक क्षेत्र उत्तम तीर्थ है :

"आहरि तीर्थपर्यन्तं प्रशस्तं सर्वतोदिशम् ॥"

पशुपति से लेकर वज्रयोगिनी तक के बीच का क्षेत्र योग सिद्धिदायक तीर्थ (योगतीर्थ) है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"मध्ये पशुपति योगिन्योर्योग क्षेत्रं च सिद्धिदम् ॥"

चांगुनारायण और पशुपति के बीच का क्षेत्र हरिहर-क्षेत्र है ।

"विष्णोपशुपतेर्मध्ये क्षेत्रं हरिहरात्मकम् ॥"

उक्त क्षेत्रों में नेपाल में पशुपति क्षेत्र अत्यन्य श्रेष्ठ है । यहाँ प्राणी भोग, मोक्ष तथा ऐश्वर्य प्राप्त करते हैं ।

"तेषांमध्ये च नेपाले क्षेत्रं पाशुपतंपरम ॥
भुक्तिमुक्ति सुखं भूतिः प्राप्यते तश जीविभिः ॥"

श्री पशुपतिनाथ के चारों तरफ एक-एक कोश तक का क्षेत्र मूल क्षेत्र है जहां श्रीनाथजी स्वयं विराजमान हैं ।

"योजनाभ्यन्तरं क्षेत्रं प्रशस्तं सर्वतोदिशम् ॥
मूलक्षेत्रं तु विज्ञेयं रूद्रेणाधिष्ठितं सदा ॥" (वराहपुराण)
"योजनाभ्यंतरं क्षेत्रं समन्तात्सर्वतोदिशम् ॥
मूलक्षेत्रं तु विज्ञेयं रूद्रेणाधिष्ठितं स्वयम् ॥" (वराहपुराण २/१५)

पशुपतिनाथ से लेकर गुह्येश्वरी तक बीच के क्षेत्र को उमा-महेश्वर क्षेत्र कहते हैं :

"मध्ये पशुपतिर्देवो ज्योतिर्लिग विराजते ॥
गुह्याक्षया समंदेव्या प्रमथैर्योगिनीगणैः ॥
उमामहेश्वरं क्षेत्रं प्रशस्तं सार्वकामिकम् ॥" (हि. ख. ७१ अ.)

अर्थात् ज्योतिर्लिङ्ग रूप श्रीनाथजी प्रमथ गणों के साथ और भगवती गुह्यकाली योगिनीगणों के साथ विराजमान संपूर्ण कामना सिद्ध करने वाला यह क्षेत्र अति उत्तम उमा-महेश्वर क्षेत्र है । अर्थात् पशुपति और गुह्येश्वरी के बीच का क्षेत्र उमामहेश्वर क्षेत्र कहलाता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्तम नेपाल क्षेत्र

"जम्बूद्विपे गरिष्ठं तत्क्षेत्रं नेपालकं विदुः ॥
अपि तस्मिनियं शैवी पुण्य भूमिर्महत्तरा ॥" (हि. ख. १४६ अ)

अर्थात् जम्बूद्वीप में नेपाल क्षेत्र अति उत्तम क्षेत्र है। उसमें भी यह शिव का मूल क्षेत्र अत्यन्त पवित्र भूमि है।

फिर शंकर भगवान कहते हैं :—

"आसितं शयितं यातं भुक्तं पीतं मृगेण मे ॥
तत्र तत्र भवेत्सर्वं पुण्यक्षेत्र हि सर्वतः ॥
ब्रह्महा गुरूहा गोघ्नः स्पृष्टो वा सर्वपातकैः ॥
क्षेत्र मेतदनुप्राप्तो निर्मलो हि भवेत्पुनः ॥" (हि ख. ८३ अ.)

अर्थात् मृगरूप में मैं जिस-जिस स्थान पर रहा, सोया, घूमा, खाया-पीया, उस-उस स्थान को पुण्यभूमि समझना। ब्रह्मघाती, गुरूघाती, गोघाती, या संपूर्ण पाप से उपलिप्त पुरूष भी इस पुण्यभूमि में आकर निष्पाप (पापरहित) हो जाता है।

"अपि दुष्कृत कर्माणः क्षेत्रेऽस्मिन्निवसन्तिये ॥
नियतं पुरुहूतस्य मृताः स्थाने वसन्ति ते ॥" (व. पु. २१५)

इस (पशुपति) क्षेत्र में निवास करने वाला मनुष्य कितना ही पापी क्यों न हो मृत्यु के बाद स्वर्गलोक को प्राप्त करेगा, यह सत्य है।

ब्रह्मा-विष्णु का विवाद समाप्त होने के बाद देवताओं द्वारा भगवान शंकर को कैलाश (मन्द्राचल) पर्वत में निवास करने का अनुरोध करने पर भगवान कहते हैं :—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"नाहं स्वर्गं गमिष्यामि अपितत्र महत्सुखम् ॥
एतत्क्षेत्रं परित्यज्य कैलाशं गोपुरं तथा ॥
देव्याः परं रहः स्थानं तपोवनमिदं प्रियम् ॥
अहोरात्र तपः सिद्धिर त्रान्यत्कोटि वर्षतः ॥" (हि. ख. १६४ अ.)

अर्थात् स्वर्ग या कैलाश में बहुत सुख होने पर भी मैं यह क्षेत्र छोड़कर नहीं जाऊँगा। यह पार्वती का प्यारा तपोवन तथा गुप्त स्थान है। अन्यत्र करोड़ों वर्ष में प्राप्त होने वाली सिद्धि यहाँ एक ही रात में प्राप्त होती है।

"पशुपति मह'क्षेत्रे सर्वङ्गिमयो क्षितिः ॥
पतितस्तिल एकोऽपि लिङ्गस्योपरि तिष्ठति ॥" (हि. ख. १५६ अ.)

चंपक (चांगु) नारायण

ब्रह्माजी द्वारा सृष्टि आरंभ करने के बाद श्री पशुपतिनाथ का दर्शन करने सभी देव-देवता आए। भगवान महाविष्णु श्रीनाथजी के सान्निध्य में रह कर सेवा करने के उद्देश्य से पवित्र स्थान की खोज करने लगे। खोज करने पर यही स्थान (चाचुं) विष्णु भगवान को पसंद आया और यहीं रह कर शिवजी की सेवा करने लगे। उस समय उस पर्वत का नाम 'स्वर्गकूट' था। एक बार 'मुर' नामक एक दैत्य के साथ देवताओं का युद्ध हुआ। इस लड़ाई में देवताओं को भागना पड़ा। विष्णु भगवान थक कर अपने पर्वत में आकर दैत्यको मारने के लिए पशुपतिनाथ की उपासना करने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लगे। उनकी उपासना से भगवान पशुपतिनाथ ने प्रसन्न होकर कहा :—

"स्वशीर्षमसिना विष्णो प्रच्छिद्याराधयेश्वरीम् ॥
हनिष्यति ततः सा तं जगत्द्रक्षार्थमुद्यता ॥" (हि. ख. १२५ अ.)

मुर दैत्य की मृत्यु छिन्नमस्ता देवी के हाथ में है। तुम अपना सर काट कर 'विष्णु मृत हो गया' ऐसा भ्रम दैत्य के मन में डाल कर देवी की आराधना करो। तब जगत की रक्षा के लिए भगवती छिन्नमस्ता देवी प्रगट होकर उस दैत्य का वध करेंगी। इसके पश्चात् माया द्वारा महाविष्णु ने ऐसा ही किया। जब मुर दैत्य वहाँ पहुंचा तो विष्णु को मृत देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ। स्वर्ग-कूट को अपने स्थान पर ले जाने के लिए उसने पकड़ कर हिलाया। तब विष्णु ने घबड़ा कर शिव की प्रार्थना की। शिवजी तत्काल 'कीलेश्वर' के रूप में वहाँ विराजमान हो गए जिससे पर्वत अडिग हो गया। विष्णु के कबन्ध से छिन्नमस्ता देवी प्रगट हुई और उन्होंने मुर दैत्य का वध कर दिया। मुर दैत्य द्वारा पकड़ कर हिलाने के कारण पर्वत का नाम 'दोलागिरी' पड़ा। आज भी इसी नाम से प्रसिद्ध है।

"विष्णुः सद्यःस्वरखड्गेन ह्यच्छिनच्छिर आत्मनः ॥
मायया मोहितुं दैत्यकूटे मुरं तदा द्विजः ॥
तस्माद्दोलगिरी प्रोक्तो मुरेण दोलितो यतः ॥"

(हि. ख. १२५ अ.)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बाद में देवताओं द्वारा महाविष्णु को वैकुण्ठ पधारने के लिए अनुरोध करने पर भगवान ने कहा :—

"दोलाद्रि नाम्नि कूटेहि नित्यं वसाम्यहंसुराः ।।
मम दर्शन मात्रेण यः कश्चित्तत्र मानुषः ।।
गच्छति ममलोकं हि विना योग सविग्रहः ।।"

हे देवताओं ! मैं सदैव इसी दोलाद्रि पर्वत पर निवास करूँगा। जो कोई मनुष्य इस दोलागिरी पर्वत में आकर मेरा दर्शन करेगा, वह सदेह (योग साधन बिना) मेरा वैकुण्ठ लोक प्राप्त करेगा। अथवा मेरा स्वरूप गरूड़वाहन होगा अर्थात् मेरा सारूप्य मुक्ति प्राप्त करेगा।

मनोहरा स्नान तथा नारायण दर्शन का फल

"मणिमत्यां च यो धीरः स्नात्वा भक्तियुतो मुने ।।
दोलाद्रिं च समारूह्य पश्यति गरूड़ध्वजम् ।
सर्वपापैर्विनिर्मुक्तः परिवारैः समन्वितः ।।
सूर्य प्रतिमयानस्थो गच्छति वैष्णवं पदम् ।।" (हि. ख. ८७ अ.)

अर्थात् जो मनुष्य भक्तिपूर्वक मनोहरा में स्नान करके दोलागिरी पहाड़ पर जाकर गरूड़ध्वज विष्णु का दर्शन करता है वह सभी पापों से मुक्त होकर सपरिवार सूर्य-सदृश्य तेजस्वी विमान में सवार होकर वैकुण्ठ जाता है।

इस स्थान पर कार्तिक शुक्ल नवमी (कुष्माण्ड नवमी) के दिन मेला लगता है। आजकल चम्पकनारायण भगवान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

332

को 'चाँगूनारायण' कहते हैं। कीलेश्वर महादेव और छिन्नमस्ता भगवती का मंदिर इसके निकट ही है।

"अद्याप्यत्रैव वै ताक्ष्यों वर्षाकाले भुजंगमान् ॥"

कहा जाता है कि यहाँ आकर गरूड़जी वर्षा काल में अभी भी सर्पों का भक्षण करते हैं और उक्त समय उन्हें पसीना आने लगता है।

वज्रयोगिनी

मधुकैटभ दैत्य के डर से ब्रह्मा ने योगनिद्रा में स्थित विष्णु भगवान् को जगाने के लिए एक स्तोत्र बनाया, अर्थात् स्तुति की। और विष्णु के नेत्रों से निद्रारूपी महामाया प्रगट हुई। वही महामाया योगिनी हैं। विधि-हरिहरादि देवताओं ने इनकी सेवा की इसीलिए इनका नाम योगिनी पड़ा। इनके निवास-पर्वत को 'योगकूट' कहा जाता है। इस योगकूट से उत्पन्न नदी को 'योगगंगा' या 'योगधारा' कहा जाता है।

"या पुरा संस्तुता देवी ब्रह्मणा सैव विश्रुता ॥
विष्णु नेत्रास्थिता माया ज्ञेया निद्रास्वरूपिणी ॥
क्वचित्कालान्तरे देवैर्योगैरियं प्रसेविता ॥
ब्रह्मविष्णुहराद्यैश्च तस्माद्योगेश्वरी श्रुता ॥" (हि. ख. १२० अ.)
"योगकूटात्स्रवन्तीं या योगगंगेति विश्रुता ॥" (हि. ख. ८७ अ.)

हिम्वत्खण्ड अध्याय ८७ में लिखा है: मणिमति (मनोहरा) और योगगंगा के संगम में योगतीर्थ है। यहाँ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्नान कर भक्तिपूर्वक वज्रयोगिनी का दर्शन करने से योगीजनद्वारा प्राप्य फल पाकर अन्त में मोक्ष प्राप्ति होती है।

"मणिमती योगगंगा संगमे योगतीर्थकम् ॥
स्नात्वा यस्तत्र वज्राख्यां मत्त्या पश्चति योगिनीम् ॥
योगिनांच फलं प्राप्य स लभेत् परमांगतिम् ॥"

व्रज का अर्थ स्थिर, योगिनी का अर्थ योग से युक्त; अर्थात् स्थिर योगवाली देवी भक्तजनों को भी स्थिरयोग या स्थिरफल प्रदान करती हैं। तांत्रिक मतावलंबी इन्हें 'उग्रतारा' भी कहते हैं।

बूढ़ानीलकण्ठ

वर्तमान सृष्टि से पूर्व सत्य युग में भगवान विष्णु समस्त सृष्टि का संहार करने के बाद जिस स्थान के एक जलाशय में अकेले योगनिद्रा में स्थित थे, वह स्थान काठमाडौं से उत्तर तीन योजन पर शिवपुरी कहलाता है। श्री महाविष्णु अनादि होने के कारण इन्हें 'बूढ़ानीलकण्ठ' भी कहते हैं। इस पवित्र स्थान में स्नान कर भक्तिपूर्वक भगवान् विष्णु की पूजा करने से इस लोक में सुखप्राप्ति होती है एवं अन्त में विष्णुलोक की प्राप्ति होती है।

"विष्णोर्मूर्तिच पश्यार्यं जलशायी कृतेयुगे ॥
संहृत्य सकलल्लोकानेक: शेतेपुरा विभुः ॥
तत्र स्नात्वार्चितो येन अनन्तो दृढभक्तितः ॥
इहलोके सुखं भुक्त्वा विष्णुलोके सगच्छति ॥"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

बूढ़ानीलकण्ठ में श्रावण के सोमवार को, कार्तिक शुक्ल द्वादशी एवं वैशाख में मेला लगता है।

देवघाट

सेतीगंगा (सेतीगंडकी) के संगमस्थलको देवघाट कहते हैं। यहाँ देवतावों ने आकर स्नान किया था, इसलिए इसे 'देवघाट' कहा जाता है। यहाँ देवतीर्थ और पुलह आश्रम है। यह तीर्थ नेपाल के तीन तीर्थों में एक है। हिमवत्खण्ड अध्याय ४४ में लिखा है :

"सर्वासां संगमे धीरैर्देवघट्टा उदाहृतः ।।
सर्वतीर्थमयस्तत्र स्नात्वाकोटिगुणंफलम् ।।"

इस देवघाट तीर्थ में स्नान करने पर अन्य संगमों से कोटिगुण अधिक फल मिलता है।

यह स्थान काठमाण्डू से १४ कोश दक्षिण में स्थित है।

"पृथिव्यां यानि तीर्थानि सन्ति फलप्रदानि च ।।
कोटि-कोटि गुणं तेभ्यः स्नानात्तत्र प्रलभ्यते ।।"

अर्थात् पृथ्वी में जितने भी फल देने वाले तीर्थ हैं, उनसे कोटिगुणा अधिक फल देवघाट में स्नान करने से मिलता है। सभी गण्डकीके संगम स्थल को देवघाट नाम दिया गया है। यह तीर्थ सर्वतीर्थमय या सर्वतीर्थस्वरूप माना जाता है।

वेत्रावती

एकदिन, जब शिवजी ने विषपान किया था, उस समय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन्हें विष के जलन से पीड़ा होने लगी। अन्त में उस पीड़ा को सहन न कर सकने के कारण वे हाथ में बेंत और त्रिशूल लेकर शीतल स्थल की खोज में निकले। रास्ते में उन्हें प्यास लगी तो गंगाजी को स्मरण कर उन्होंने बेंत को भूमि में गाड़ा। वहाँ गंगाजी प्रगट हुईं। इस गंगा का नाम 'वेत्रावती' पड़ा। वेत्रावती अति पवित्र नदी है।

त्रिशूल

वहाँ से थोड़ी दूर बढ़ने पर जाते-जाते पहाड़ पर उन्हें फिर प्यास लगी। पुनः गंगाजी का स्मरण कर अपन त्रिशूल को उन्होंने जमीन में गाड़ा। त्रिशूलस्गाड़ने के कारण प्रगट हुईं गंगाजी का नाम 'त्रिशूली' पड़ा। यह नदी अत्यन्त पवित्र माना गया है।

"समुद्भूता त्रिशिूलात्सा त्रिधारागाढ़शोभना ॥
तस्मात् त्रिशूलगंगेति समाख्या सुरासुरैः ॥" (हि. ख. ४५ अ.)

जिस तालाब में पार्वतीजी ने स्नान कर तपस्या किया था, उसी तालाब में शंकरजी पहुँचे। तालाब का जल अत्यन्त शीतल होने के कारण शंकर भगवान ने हर्षित होकर उस में प्रवेश किया और सौ बर्ष (देवताओं का) तक उसी में शयन किया।

"हृदमध्येततोरुद्रः प्रविश्य चातिहर्षितः ॥
अशयिष्ट सुखाद्धी बहुशीत जलोत्तमे ॥
दिव्यवर्षं शतं व्याप्य सुष्वाय च सुखंविभुः ॥" (हि. ख. ४६ आ.)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

"उमामहेशयोर्मूर्तिः प्रत्यक्षं तज्जलेमुने ? ।।
भुक्तिमुक्ति प्रदासाक्षात् स्नातकेभ्योददातितत् ।।" (हि. ख ४७ अ.)

अर्थात् आजकल भी यहाँ स्नान करनेवाले मनुष्य साक्षात् शिव का दर्शन पाते हैं। यहाँ स्नान करनेवाले मनुष्य को स्वयं शिव भुक्तिमुक्ति प्रदान करते हैं। उक्त स्थान को 'गोसाईं स्थान' कहा जाता है। 'गोसाईंस्थान' या कुण्ड के पहले नागकुण्ड पड़ता है। पूर्व में दूधकुण्ड, गणेशकुण्ड, सरस्वती कुण्ड और अन्त में सूर्यकुण्ड पड़ता है। वहाँ श्रावण शुक्ल पूर्णिमा (ऋषिपंचमी) के दिन स्नान करने की महिमा है। ज्येष्ठ शुक्ल दशमी (दशहरा) के दिन भी मेला लगता यह स्थान काठमाण्डौं से लगभग ३२ किलोमीटर दूर है।

कृष्णागण्डकी

गण्डकी के उत्पत्ति के बारे में कल्पभेद अनुसार पुराणों में अनेक वर्णन हैं। कहा गया है : यह स्थान अत्यन्त पवित्र तीर्थ है जहाँ महाविष्णु शालिग्राम का रूप लेकर जगत का उद्धार करते हुए निवास करते हैं।

"विष्णुर्बभूव तस्यां वै शालग्राम शिलातनुः ।।
सर्वलोक हितार्थाय वृन्दाशापेन निश्चितम् ।।" (हि. ख. ५५ अ.)

उक्त गण्डकी नदी में सबका हित करने वाले महाविष्णु वृन्दा के शाप से शालिग्राम स्वरूप हुए हैं। यह बात सत्य है। शालिग्राम में चक्र आदि चिन्ह निर्माण करने के लिए विष्णु ने विश्वकर्मा को आदेश दिया था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"विश्वसृकत्वं च मे मूर्तीर्नाना चिन्है: सुनिर्मय ।।
भूत्वा च वज्रकीटोवै कृष्णामाभ्यन्तरे स्थित: ।।"

हे विश्वकर्मा ! तुम कृष्णागण्डकी में वज्रकीट बनकर मेरी मूर्तियों (शालिग्राम) को अनेक चिन्हों से चिन्हित बनाओ !

इस प्रकार भगवान विष्णु का आदेश पाकर विश्वकर्मा अभी भी वज्रकीट बनकर शालिग्राम को अनेक चिन्हों से युक्त बनाते हैं। वराह पुराण में उल्लेख है :—

"शालग्राम शिला पूजां विना योऽश्नाति मानवः ।।
स चाण्डालो हि विष्ठायामाकल्पं जायते कृमि ।।
जम्बामलक तुल्या या सूक्ष्म चक्रन्दयान्विता ।।
तस्थामेव सदा देविश्रिया सह वसाम्यहम् ।।
शालग्राम समीपेतु क्रोशमात्रं समीपत: ।।
कीटकोपि मृतोयापि वैकुण्ठ भवनं नर: ।।"

अर्थात् जो मनुष्य शालिग्राम की पूजा किए बिना भोजन करता है, वह चाण्डाल की भाँति पतित होकर कल्प-कल्पान्त तक विष्टा का कीड़ा होता है। जामुन अथवा आँवला के आकार के दो चक्रयुक्त छोटे शालिग्राम की पूजा सभी गृहस्थों को करनी चाहिए। हे पृथ्वी, मैं लक्ष्मी सहित इसी में निवास करता हूँ। शालिग्राम के नजदीक अर्थात् चतुर्दिक एक कोश के भीतर एक कीड़ा भी मरता है तो वह वैकुण्ठ को प्राप्त होता है। फिर, जो शालिग्राम की पूजा करने वाला भक्त है, उसकी बात ही क्या है !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुक्तिनाथ

नेपाल क्षेत्र के पश्चिम काठमांडू से नब्बे कोश दूर 'मुक्ति क्षेत्र' स्थित है। मुक्ति प्राप्ति के लिए ब्रह्माजी ने यहाँ योगरूप यज्ञ किया था, इसलिए यह स्थान मुक्ति क्षेत्र के नाम से विख्यात है। जिस स्थान पर शिव अग्निरूप में हैं, विष्णु जलरूप में, और ब्रह्मा होता रूप में, उस स्थान का वर्णन कौन कर सकता है ? यहाँ तप्त कुंड है, जहाँ चारों वर्ण के मनुष्य मुक्ति पा सकते हैं :

"मुक्ति हेतोः कृतो यज्ञो ब्रह्मणां योग संज्ञकः ॥
मुक्ति क्षेत्र मिति ख्यातं तस्माल्लोके घटेंद्भव ॥
प्रत्यक्ष यत्र रूद्रो सावग्नि मुक्तिर्धर स्तथा ॥
विष्णुञ्चामृत मूर्तिश्च होताजस्तत्र किं पुनः ॥
लोकाश्चतु र्विधोद्भवाः स्नात्वा यत्र कलेवरम् ॥
त्यक्ता मुक्ति प्राप्नुवन्ति मुक्तिक्षेत्रं ततः स्मृतम् ॥"

अद्भुत महालिंग मुक्तिनाथ

"तदारान्मुक्तिनाथाख्यं शिवलिंगम् महाद्भुतम् ॥
दर्शनादर्चनात्तस्य भुक्तिर्मुक्तिश्च लभ्यते ॥" (शिव पुराण, ५१)

अद्भुत शिवलिंग मुक्तिनाथ के दर्शन-पूजन से भुक्ति-मुक्ति दोनों प्राप्त होते हैं।

नेपालक्षेत्र और इसकी सीमा

पूर्व में कौशिकी नदी, पश्चिम में गण्डकी नदी, उत्तर में गोसाईंकुण्ड, दक्षिण में नटाभरेश्वर-इन चारों के बीच

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पर्वतों की गोद के बसा सर्वसुखप्रद और देवताओं द्वारा निवास किया गया पशुपतिक्षेत्र को 'नेपाल क्षेत्र' कहा गया है। इस पवित्र भूमिको युगभेद के अनुसार विभिन्न नामों से पुकारा गया है।

"गण्डकी कौशिकी चैव तयोर्मध्येवरं स्थलम् ॥
नीलकंठ नटेशौ च तयोर्मध्ये तथाविध ॥
नेपालमिति विख्यातं देवक्षेत्रं सुखप्रदम् ॥
मध्ये सारंगरिष्ठाना मेतेषां क्षमाभृतां मुने ॥
पाशुपतं महाक्षेत्रं सततं प्रविराजते ॥" (हि. ख. ७० अ.)

कलिकाल में इस क्षेत्र का नाम नेपाल है :

"कृते सत्यपुरी ज्ञेया त्रेतायां च तपोवनी ॥
द्वापरे मुक्तिका नाम कलौ नेपालिका पुरी ॥ "(हि. ख. १६२अ.)

सत्ययुग में 'सत्यपुरी', देवादि ऋषियों का तपस्थल होने से त्रेता में 'तपोवनी', द्वापर में मुक्तिदायक होने के कारण 'मुक्तिका', और 'ने' नामक मुनि द्वारा पालन किए जाने के कारण 'नेपाल' नाम कलियुग में विख्यात है। शिव-पुराणादि में इस स्थान का नाम न्यायलक्षणाजन्य वा न्याय-प्रतिपाद्य धर्मपालन करने वाला होने के कारण 'नयपाल' भी कहा गया है।

'नेपाल महात्म्य' १५ में और पुराणान्तर में नेपाल क्षेत्र की सीमा इस प्रकार दी गयी है :

"पूर्वास्यां कौशिकी पुण्या सर्वपाप विनाशिनी ॥
तथा त्रिशूल गंगाख्या प्रतीच्यां दिशिसंस्थिता ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्तरस्यां दिशि तथा सीमा शिवपुरी मता ॥
दक्षिणस्यां दिशि नदी पवित्रा शीतलोदका ॥
एतन्मध्ये महापुण्यं नेपालं क्षेत्रमीरितम् ॥" (ने. म. अ. १५)
"उत्तरेण सु गंगाया दक्षिणे चाश्विनीमुखात् ॥
क्षेत्रं हि मम तज्ज्ञेयं योजनानि चतुर्दश ॥" (व. पु. २१५ अ.)
" गंगाया उत्तरेणऽज दक्षिणेनाऽश्ववक्रतः ॥
क्षेत्रं हिवमतः पुण्यं पञ्चाषद्योजनानि सु ॥" (स्कन्दपुराण)

अर्थात् सर्व पाप नाश करने वाली एवं पुण्य प्रदान करने वाली कौशिकी (कोशी नदी) पूर्व में, पश्चिम में त्रिशूली, उत्तर में शिवपुरी पर्वत, दक्षिण में पवित्र एवं शीतल जल वाली नदी–इन चार सीमाओं के भीतर नेपाल क्षेत्र स्थित है।

गंगा के उत्तर, हयग्रीव के दक्षिण, हिमालय के नजदीक ५६ कोश चौड़ा और २०० कोश लम्बा क्षेत्र नेपाल (पशुपति) क्षेत्र है।

नेपाल को हिम्वत्खंड में उत्तरकाशी कहा गया है।

"उद्गतातिशयेनैव उत्तरेण हिमालयात् ॥
काशिताभि प्रदीप्ता योत्तरा काशीति विश्रुता ॥" (हि. ख. ७२अ.)

सफल पुरी में श्रेष्ठ और तेजस्वी, प्रकाशमान, भरतखंड का उत्तरवर्ती दीप्तिमान् क्षेत्र उत्तरकाशी नाम से प्रसिद्ध है। अन्य क्षेत्रों में करोड़ों जन्म तक पुण्य करने से प्राप्त मोक्ष मनुष्य को इस पवित्र एवं मोक्षदायी पाशुपत क्षेत्र में सहज ही प्राप्त होता है। इसत्र पवित्र क्षेत्र में पक्षी आदि भी शरीर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छोड्ने के बाद दूसरे जन्म में ब्राह्मण कुल में जन्म पाते हैं। तथा चारों पुरुषार्थ को प्राप्त कर मुक्त होते हैं :

"कोटि जन्मार्जितैः पुण्यैरन्यक्षत्रेषु मानवै ॥
पुरी पाशुपती पुण्यालभ्यते मोक्षदा ध्रुवम् ॥
अण्डजोऽपि भवेद्विप्रस्तत्र देहान्तरे मुने ॥
चतुर्वर्ग फलं प्राप्य गच्छति परमं पदम् ॥"

यह नेपाल क्षेत्र तीर्थ, लिंग और देवताओं का निवास स्थान होने के कारण, तथा अपने गणों सहित साक्षात् ज्योतिर्लिङ्ग शिवजी विराजमान होने के कारण श्रेष्ठ स्थान है। जिस स्थान में करोड़ों शिवलिंग विद्यमान हैं, सभी की कामना पूर्ण करने वाला नेपाल क्षेत्र धन्य है।

"क्षेत्रं नेपालक पुण्य तीर्थैर्लिङ्गै स्तथामरैः ॥
पशुपतीश्वरो यत्र ज्योतिर्लिङ्ग विराजते ॥
सुरगणैः समं शश्वन्तन्नेपालो विशिष्यते ॥
धन्यं नैपालिकं क्षेत्रं लोक काम वरप्रदम् ।
राजन्ते यत्र लिङ्गानि कोटीनां च प्रमाणतः ॥ (हि. ख. ७० अ.)

'नेपाल' नाम रहने का कारण

"नेनाम्ना मुनिना यस्मात्पालितं पुण्यकर्मणा ॥ ६१ ॥
"क्षेत्रं हिमवतः कुक्षौ ततो 'नेपाल' संज्ञकम् ॥" (नेपाल माहात्म्य, ११ अ.)

मरीचि ऋषिपुत्र 'ने' मुनि को वज्रयोगिनी का वरदान

सत्ययुग में महातपस्वी, बुद्धिमान, सकल प्राणियों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पर दया करने वाले मुनिश्रेष्ठ मरीचिपुत्र 'ने' मुनि थे। उन्होंने भगवती वज्रयोगिनी की बारह वर्षों तक तपस्या की। ने मुनि के तप से योगिनी प्रसन्न हुईं, और वरदान दिया, 'हे तात! धर्मपूर्वक धर्म की रक्षा वाले पशुपति के इस श्रेष्ठ स्थान का पालन तुम निरन्तर करो। इस से इसका नाम तुम्हारे नाम से पुकारा जायगा।'

"नेनाम्ना श्रीमुं निश्रेष्ठ आसीत्पुरा महातपाः ॥
मरीचेस्तनयो धीमान् सर्वसत्व दयापरः ॥"
त्वं च पालय हे वत्स इदं स्थानं निरन्तरम् ॥
वरे पशुपतेः क्षेत्रं धर्मेण धर्म रक्षितुः ॥
ततो लोका वदिष्यंति सेऽ भिधाने सन्तमम् ॥" (हि. ख. ६९अ.)

आर्यावर्त्त के सभी तीर्थों में श्रेष्ठ : नेपाल क्षेत्र

आर्यावर्त्त में अयोध्या, मथुरा-वृन्दावन, केदारनाथ, बद्रीनाथ, मुक्तिक्षेत्र आदि बहुत से पवित्र क्षेत्र हैं। लेकिन उन सब में 'नेपालक्षेत्र' सर्वोत्तम क्षेत्र है। कहा भी गया है :

"यावन्ति भुवि तीर्थानि ह्यासमुद्रंसरांसिच ॥
क्षेत्रेऽस्मिस्तानि तीर्थानि चागमिष्यान्तिमत्कृते ॥
तपस्तपोद्यनानां च सिद्धक्षेत्रं हित्मृतम् ॥
प्रभासाच्च प्रयागाच्च नैमिषात्पुष्करादपि ॥
कुरूक्षेत्राच्चविबुधाः क्षेत्रमेतद्विशिष्यते ॥" (वराहपुराण २१५ अ.)

अर्थात्, पृथ्वी में समुद्र से लेकर छोटे-छोटे तालाब तक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के जो तीर्थ हैं वे सब मेरे लिए नेपाल क्षेत्र आयेंगे। हे देवताओं, तपस्वियों द्वारा सेवित सिद्धिदायक यह नेपाल क्षेत्र प्रभास, प्रयाग, नैमिषारण्य, पुष्कर, तथा कुरूक्षेत्र से भी श्रेष्ठ है।

हिमवत्खंड (५७ अध्याय) में वर्णित है :—

"त्रैलोक्यानां गरिष्ठोऽयं नेपाल इति सर्वतः ।।
द्वीपानां चैव सप्तानां जम्बू द्वीपो गरीयसः ।।
तास्मिच्चैव गरिष्ठं च वाराणसी स्थलं महत् ।।
तस्माच्चतुर्गुणं ज्ञेयं श्रेष्ठं क्षेत्रं च कामदम् ।।
भुक्तिमुक्ति प्रदं साक्षात्पशुपतिस्थलं महत् ।।"

अर्थात्, सप्तद्वीप में जम्बूद्वीप श्रेष्ठ है। उसमें काशी महाश्रेष्ठ है। उस से भी श्रेष्ठ भुक्तिमुक्ति आदि सम्पूर्ण इच्छा पूर्ण करने वाला, शिवजी का खास निवास स्थल नेपाल तीनों लोक में अत्यन्त श्रेष्ठ है।

"जम्बूद्वीपे पुरौद्वेहि रूद्रेणाधिष्ठिते निशम् ।।
काशी पाशुपती चैव तयोः पाशुपतिवरा ।।
मोक्ष एकस्तु काश्यां चैव लभ्यते जन्तुभिः सदा ।।
उमामाहेश्वरी पुर्यां चतुर्वर्गं घटोद्भवः ।।" (हि. ख. ७२ अ.)
"बलिष्ठं क्षेत्रमेतस्मात्त्रिषु लोकेषु नविद्यते ।।" (हि. ख. ८० अ.)

अर्थात् जम्बूद्वीप में शिवजी के शुभस्थान दो हैं : काशी और नेपाल। इन दोनों में नेपाल श्रेष्ठ है। काशी में तो मनुष्य को मोक्ष मात्र प्राप्त होता है, लेकिन नेपाल में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-इन चारों फलों की सहज प्राप्ति होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पापादि नाश करके मुक्तिमुक्ति दिलाने वाला स्थान तीनों लोक में नेपाल के सिवाय और कोई नहीं है।

श्री पशुपतिनाथ कथा

सृष्टि के पूर्व संसार जलमय था। उस समय ब्रह्मा-विष्णु मात्र थे। वे दोनों शिवमाया से मोहित होकर 'मैं ही ईश्वर हूँ, मैं ही ईश्वर हूँ' कह कर झगड़ा करने लगे। झगड़ा जलक्रीड़ा करते-करते प्रारंभ हुआ था। झगड़ा करते-करते देवताओं के दस हजार वर्ष बीत गए। अब केवल हाथापाई होनी बाकी रह गया। इसी समय दोनों के मध्य एकाएक एक ज्योति प्रगट हुई। जो चालिस हजार योजन तक फैली हुई थी। इसकी ऊँचाई असंख्य योजन थी। यह ज्योति अतिशय तेजस्वी थी।

"योजनायुत विस्तिर्ण बहुयोजन मुच्छ्रितम् ॥
ज्वलमानं स्वतेजोभिरव्यक्तं तेजसापरम् ॥" (हि. ख. ७४ अ.)

ज्योति का ताप सहन न कर सकने पर दोनों पीछे हटे और विचार करने लगे—'यह क्या है ?' (इदम किम्) इतने में ही ज्योति कुछ शांत हुई और "मेरी शक्ति से तुम दोनों समर्थवान् हुए हो। मेरे इस ज्योर्तिलिंग का आदि-अन्त जो पता लगाएगा, वही ईश्वर माना जायगा !" ऐसी आकाशवाणी हुई। यह सुन कर दोनों बड़े उत्साह से ज्योति का आदि-अन्त पता लगाने दौड़ पड़े। ब्रह्माजी ऊपर की ओर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और विष्णु नीचे की ओर चले। दोनों को जाते-जाते हजारों वर्ष बीत गए लेकिन न तो ब्रह्मा को उसका शीर्ष पता लगा और न विष्णु को तल (आधार)। महातल में विष्णु और शेष की मुलाकात हुई। शेष ने विष्णु को शिवतत्व का उपदेश दिया, जिससे विष्णु अपना अभिमान छोड़ कर अपने स्थान पर लौट आए। उधर ब्रह्मा ऊपर जाते-जाते हैरान हो गए और अन्त का पता नहीं लगा सके। उन्होंने सोचा, 'विष्णु आदि-अन्त का पता लगा कर ईश्वर बन जायेंगे। यह अच्छा नहीं होगा।' फिर उन्होंने अपने को ईश्वर बनने का उपाय सोचा और केतकी, जपापुष्प, बन्धूक, और कामधेनु को अपना साक्षी बना कर अपने पूर्ववत् स्थान पर ले आए। उन्होंने कहा, "मैंने ज्योति के आदि-अन्त पता लगा लिया है, इसके लिए मैं अपने साथ साक्षी भी लाया हूँ। उन्होंने मुझे पता लगाते देखा है। विश्वास न हो तो इनसे पूछ लें।" तब विष्णु ने चारों से पूछा। उनमें से केतकी, जपापुष्प और बन्धूक-तीनों ने कहा—"ब्रम्हाजी सत्य कहते हैं। हम तीनों इस ज्योतिपुंज के शीर्ष पर थे। ब्रम्हाजी हम तीनों को यहाँ लाए हैं।" कामधेनु ने कहा—"मैं शीर्ष पर बैठी वहाँ चढ़ाए गए बेलपत्र आदि खाया करती थी। ब्रम्हाजी मुझे साक्षी बनाने यहाँ लाए हैं!" ब्रम्हा ने ज्योति का अन्त्य पता लगा लिया है, यह सुनकर विष्णु को आश्चर्य हुआ और दुःखीत होकर चूप हो गए। तभी शिवजी ने आकाशवाणी से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कहा–"ब्रम्हा और इनके साक्षीगण झूठ बोल रहे हैं। ब्रम्हा ने अपने को पूज्य बनाने के लिए महाझूठ काम किया अतः संसार में इनकी कोई पूजा नहीं करेगा। इनके साक्षी केतकी, जपापुष्प और बन्धूक पुष्प ये तीनों मेरी पूजा के लिए वर्णित होंगे। जो कोई इन फूलों को मुझे चढ़ाएगा, उन्हें ब्रम्ह हत्या का पाप लगेगा। कामधेनु ने झूठ बोला, इसलिए इसका मुँह अशुद्ध हो गया है।" इस प्रकार की आकाशवाणी सुन कर ब्रम्हा और उनके साक्षी लज्जित हो गए। वे विष्णु को ईश्वर मान कर अपराध क्षमा करने के लिए शिवजी की स्तुति करने लगे। तब —

"देवेश्वरः सुसंतुष्ट स्ताभ्यां लिंगमृदर्शयत् ॥
लिंगमध्ये गतंलिंगम् स्थितं प्रादेशसंमितम् ॥
नैव तत्काञ्चनं रौप्यं ताम्रं स्फाटिक मौक्तिकम् ॥"
(हि. ख. ७४ अ.)

भगवान् शंकर ने अत्यन्त प्रसन्न होकर दोनों को उसी ज्योति के मध्य में एक बीत्ता लम्बे भव्य ज्योतिलिंग का दर्शन दिया। इस तरह दिव्य अलौकिक लिंग का दर्शन पाकर दोनों ने फिर स्तुति की। इससे शिवजी और भी प्रसन्न हुए।

"भूयोददृशस्तुतोतल्लिग मध्ये व्यवस्थितम् ॥
प्रकृत्या सह संयुक्तं चित्ररूपं महोज्वलम् ॥" (हि. ख. ७४ अ.)

फिर दोनों को उसी दिव्य ज्योतिर्लिंग के मध्य शिव-पार्वती का दिव्य दर्शन प्राप्त हुआ। दर्शन से आल्हादित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होकर दोनों ने बारम्बार उस ज्योतिर्लिंग की प्रदक्षिणा एवं स्तुति की। तब शिवजी ने और भी प्रसन्न होकर गौरी सहित पाँच मुख और आठ हात वाले अपने दुर्लभ रूप का दर्शन दिया। हाथों में जपमाला और अमृत कलश (कमण्डल) लिए इस रूप को 'आत्मलिंग' कहते हैं।

"अदर्शयत्स्वकंलिंग शक्त्याविरहितंपरम् ।।
प्रमाणंधनुषश्चार्यं पञ्चवक्राणि धारयन् ।।
पंचास्य मक्षमालास्य घटान्पूर्णा ऽ मृतांस्तथा ।।
दधानंदिक्करै लिंगं सपीठकम् पश्यत्ताम् ।:" (हि. ख. ७४ अ.)

तत्पश्चात् शिव ने ब्रह्मा को सृष्टिकर्ता बनाया और विष्णु को पालनकर्ता। चारों ओर जलमय संसार को देख कर ब्रह्मा ने जल सुखाने के लिए शिवजी की प्रार्थना की। ब्रह्मा की प्रार्थना सुन कर शिवजी ने दावानल, लम्बोदर गणेश; सूर्य एवं चन्द्रमा को प्रगट किया। उन्होंने दावानल को जल सुखा कर पृथ्वी की रक्षा के लिए समुद्र के अन्दर रहने की आज्ञा दी। गणेश को पृथ्वी के उपर जमे पानी को अपने श्वास से सुखाने को आज्ञा दी। सूर्य को पृथ्वी में प्रकाश फैलाने एवं रस-पाक करने की आज्ञा। चन्द्रमा को पृथ्वी को शीतलता प्रदान करने और रसपुष्ट करने की आज्ञा दी। फिर ब्रह्मा को सृष्टि करने और विष्णु को उस सृष्टि का पालन करने की आज्ञा दी। ब्रह्मा-विष्णु ने शिवजी का जय-जयकार करते हुए विनती कि वे हमेशा भगवान शिव का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दर्शन पाते रहें और उनकी सेवा करते रहें। यह सुन कर भगवान् शिव ने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा—

ज्ञान पुस्तक निकेतन
सूची क्र. नं. ...४८...
दर्ता मिति ...२०४३/१०/२५
विभागीय दर्ता नं. ...६...

"सहस्त्रवत्सरान्ते च एतांल्लिगं सुरार्चितम् ॥
पुरी स्वर्णमयीदिव्या भविष्यतीयु मुक्तिदा ॥
दिव्यायुक्त सहस्त्राणि यावत्सहस्रवत्सरान् ॥
स्थास्याम्यनेन रूपेण भूतले देवपूजिते ॥
ततो म्लेछेरतिक्रान्ते भूमेरन्तर्गते मयि ॥
नरामां गूढरूपं ते न ज्ञास्यन्ते विधे हरे ॥
म्लेच्छगणे विलीने तु अच्युताद्वान्महद्वने ॥
धारयिष्याम्यहं चात्र पशुरूपं महोज्वलम् ॥
सुखं स्थास्याम्यहं मध्ये पशूनां क्रीडयन्मुदा ॥
ततः पशुपतिश्चेति वदिष्यन्ति च मां सदा ॥" (हि. ख. ७६ अ)

एक हजार वर्षबाद इस ज्योतिर्लिङ्ग को देवतादि पूजा करने लगेंगे और यहाँ मुक्तिदायी स्वर्णमयी नगरी का निर्माण होगा। मैं देवताओं द्वारा पूजित इस स्वर्ण नगरी में हजारों वर्ष तक लिंग रूप में वास करूँगा। जब इस भूमिको म्लेच्छ आकर ढक लेंगे उस वक्त मैं अधर्म के कारण पृथ्वी में गुप्त रूप से निवास करूँगा। कुछ समय बाद जब म्लेच्छ नष्ट हो जायेंगे, तब समीपवर्ती वन में तेजस्वी मृगरूप में दस हजार वर्षों तक हर्ष के साथ विहार करूँगा। पशु (मृग) रूप में रहने के कारण मैं 'पशुपति' नाम से जाना जाऊंगा।

मृगरूप भी गुप्त होने के बाद पृथ्वी में गुप्त रूप में स्थित मेरे लिंग का पता कामधेनु द्वारा लगेगा। तब लोग मुझे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निकालने के लिए भूमि खोदने लगेंगे। जमीन खोदने से मेरा जो तेज प्रगट होगा, उससे म्लेच्छ जल कर मुक्त हो जायेंगे। इसके पश्चात् 'सत्य युग' का आविर्भाव होगा।

सत्ययुग' में मेरा पंचमुखी स्वरूप रहेगा :

"कृते युगे में पंचास्यं रूपमत्र भविष्यति ॥"

इतना कहने के बाद लोक कल्याणार्थ भक्तवत्सल भगवान् शिव धनुप्रमाण अर्थात चार हाथ ऊंचे ज्योतिर्लिङ्ग रूप में इस पृथ्वी पर विराजमान हुए। इसी रूप का आजकल हमें दर्शन प्राप्त होता है।

स्वामी कार्तिकेय अगस्त्य मुनी से कहते हैं :

"हिमवद्दक्षिणे सानौ नेपाल नाम गह्वरे ॥
राजते तत्र तल्लिङ्गं जलेनाऽऽच्छादिताक्षितौ ॥
प्रमाणं धनुषोगात्रं सर्वदेवैः प्रसेवितम् ॥" (हि. ख. ७७ अ.)

हिमालय के दक्षिण में स्थित 'नेपाल' नामक गुफा में जल पूरित भूमि में, सभी देवताओं द्वारा पूजित-सेवित चार हाथ ऊँचा ज्योतिर्लिङ्ग आज भी विद्यमान है। शिवजी जल में ज्योतिर्लिङ्ग में रहने के पश्चात्, दावानल ने पृथ्वी का शोषण कर लिया और समुद्र में जाकर बड़वानल के रूप में रहने लगा। बड़वानल आज भी समुद्र का पानी बढ़ने पर उसे सुखा कर पृथ्वी की रक्षा करता है।

पानी सूख जाने पर पृथ्वी स्पष्ट रूप में दिखाइ देने लगी। तब ब्रह्मा ने पृथ्वी पर सृष्टि की रचना की। सूर्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आकाश में रह कर पृथ्वी पर प्रकाश फैलाते हुए रस पाक करने लगे। चन्द्रमा भी अपनी किरणों द्वारा अमृत वर्षा करते हुए रसों को पुष्ट करने लगे। दोनों अपने-अपने कर्मों में आज भी अडिग हैं। नेपाल उपत्यका के बाकी जल को शिवजी के आज्ञानुसार लम्बोदर गणेश ने सुखाया और इसकी रक्षा के लिए रक्षक रूप में नैऋत्य कोण में विराजमान हुए।

'-लम्बोदरस्तदा चास नैर्ऋत्यां दिशिसत्तमः ॥
तत्क्षेत्रं पालयन्नित्यं सर्वसिद्धि प्रदोनृणाम् ॥" (हि ख ७७ अ.)

इसके पश्चात् शिवजी की इच्छानुसार अनेक कारीगरों के साथ विश्वकर्मा ने इस स्वर्णनगरी को श्रीनाथजी की प्रीति के लिए सुन्दरता से सजाया। यह स्वर्णपुरी शिवजी की राजधानी बनी। उस दिन से लेकर बारह हजार वर्षों तक देवतागण इस स्वर्णपुरी में आकर प्रतिदिन पशुपतिनाथ की सेवा में तत्पर रहने लगे। साथ ही कोटि-कोटि ऋषिमुनि भी यहाँ पर करने लगे। अतः इस का नाम 'तपोवन' पड़ा।

कुछ समय पश्चात् इस स्थान पर म्लेच्छों की वृद्धि से अधर्म को प्रश्रय मिलने लगा। अतः ज्योतिर्लिङ्ग गुप्त हो गया और देवतागण अपने-अपने स्थानों को चले गए। ब्रह्माजी गोगणस्थित अपने आश्रय में तप करने चले गए।

कुछ समय पश्चात् म्लेच्छों का नाश हुआ, अधर्म भी कम हो गया। 'देवताओं में मेरे प्रति कितना प्रेम है ? मेरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न होने पर वे क्या करते हैं ?' यह जानने हेतु तीनों लोक के कल्याण करने वाले शिवजी एक सिंगवाले; सुवर्ण जैसे चमकीले मृग का रूप लेकर गुप्त रूप से श्लेष्मान्तक वन में अवतरित हुए। उस वन में आगमन के पश्चात् सर्वप्रथम श्लेष्मान्तक नाग की रक्षा की और उसे वरदान देने के पश्चात् उस वन में स्वच्छन्दतापूर्वक विहार करने लगे। यद्यपि इस बात को शिवजी ने ब्रह्मा-विष्णु को पहले ही बता दिया था, लेकिन शिवमाया से मोहित होकर वे सब कुछ भूल गए। यह बात केवल पार्वती और नन्दी को ही याद रही। शिवजी ने नन्दी से कहा था :—

"मृगरूपेण चरता तत्र वै त्रिदशामया ॥
द्रष्टव्याः संजिघृक्षन्तः खिन्नाश्चान्वेषणेमम ॥
नवक्तव्यं त्वया तेषां देवताप्सरसामिदम् ॥" (वायुपुराण २१४अ.)

अर्थात् "मृग रूप में विहार करते हुए मेरे रूप का दर्शन करने के इच्छुक मुझे खोजते हुए हैरान हुए देवतागण क्या करते हैं, यह देखना है; अतः तुम उन्हें यह मत बताना कि मैं मृग रूप में विहार कर रहा हूँ।"

मृगरूप में विहार करते हुए शिवजी को दिव्य दस हजार वर्ष व्यतीत हो गए। तब तक भी देवताओं को जब शिवजी का दर्शन न मिला तो बड़े दुःखित हुए। उन्होंने सारे ब्रह्मांड में खोजा, लेकिन कहीं भी न पा सके तब उन्होंने ब्रह्माजी से पूछा। ब्रह्माजी ने योग शक्ति द्वारा पता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लगाया कि शिवजी श्लेष्मान्तक वन मे मृग रूप में विहार कर रहे हैं। तब महाविष्णु को साथ लेकर इन्द्रादि देवताओं सहित ब्रह्मा श्लेष्मान्तक वन में गए। वहाँ वाग्मति तट पर अकेली खेल रही एक अत्यन्त सुन्दरी कन्या को देखकर वे आश्चर्यचकित हुए। कन्या का तेज देखकर ब्रह्मादि देवताओं ने सोचा, निश्चय ही ये जगन्माता गुह्येश्वरी हैं। उनकी स्तुति करते हुए देवताओं ने 'शिवजी कहाँ हैं?' विनय पूर्वक पूछा। प्रसन्न होकर भगवती ने ब्रह्मादि देवताओं को शिवजी की क्रीड़ास्थली का पता बताया। (इसे ध्रुव स्थली भी कहते हैं जो त्रिभुवन विमानघाट के समीप पड़ता है।) वहाँ जाकर देवताओं ने शिवजी के दिव्य रूप को देखा और उन्हें साष्टांग दण्डवत् करके उनकी स्तुति करने लगे। शिवजी उनकी स्तुति सुनि अनसुनी कर जंगल की ओर भाग चले। यह देख कर ब्रह्मा-विष्णु-इन्द्रादि देवताओं ने उनका पीछा करके उनका सिंग पकड़ लिया। मृग उछल कर आकाश मार्ग में विलीन हो गया। ब्रह्मा, विष्णु-इन्द्र के हाथ में मात्र सिंग रह गया। यह देख कर तीनों अत्यन्त खिन्न होकर शिवजी की स्तुति करने लगे। देवताओं की स्तुति सुन कर शिवजी ने आकाश में ही अपने दिव्य स्वरूप का दर्शन दिया। और देवताओं से कहा : "मैं यहाँ सदैव लिंग रूप में स्थित रहूँगा। तीनों लोक के कल्याण के लिए मैंने मृग रूप लिया था। मेरे सिंग के तीनों टुकड़ों को तीन लोक में स्थापित करना। जहाँ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जहाँ इनकी स्थापना होगी, वहाँ वहाँ रहकर मैं लोक का कल्याण करूँगा।" शिवजी की आज्ञा को सुन कर तीनों देवता अत्यन्त प्रसन्न हुए, और शिवजी आज्ञानुसार सिंग के तीन टुकड़ों को ले जाकर तीन लोकों में स्थापित किया। इस प्रकार भक्तवत्सल दीनदयाल भगवान् शिव ने मृग रूप लेकर अपने सिंग के तीन टुकड़ों को तीन लोक में स्थापित कराकर गुप्त रूप से तीनों लोक का उद्धार करते रहे। लेकिन उनके प्रत्यक्ष दर्शन से वंचित देवतागण अत्यन्त व्याकुल रहा करते थे।

जिस स्थान पर पशुपतिनाथ गुप्त रूप से रह रहे थे, वहाँ बहुत सी मिट्टी जमा हो गई थी। कामधेनु प्रतिदिन वाग्मति गंगा स्नान करने के बाद अपने दूध से शिव का अभिषेक कर, चन्द्राचल गिरि के पार्श्व में स्थित शिखरनारायण में रहने लगी। "कामधेनु सदा गत्य दुग्धं स्रवति नित्यशः॥" इसी प्रकार दिव्य दस हजार वर्ष व्यतीत हो गए।

एकदिन एक म्लेच्छ ने कामधेनु को गुप्त रूप से स्थित शिवलिंग को अभिषेक करते देखा। उसने अपने साथियों से कहा कि उस स्थान पर अवश्य ही अपार सम्पत्ति होनी चाहिए। अतः सभी म्लेच्छ उस स्थान को खोदने लगे। चार हाथ जमीन खोदने के बाद शिवलिंग प्रगट हुआ और उसके भीषण तेज से सभी म्लेच्छ जल कर भष्म हो गए। शिवलिंग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के समीप प्राणत्याग करने के कारण म्लेच्छ होने पर भी उन्हें कैलाश पद प्राप्त हुआ।

यह खबर चारों ओर फैली। ब्रह्माजी को अपने दिव्य दृष्टि से पता लगा कि पशुपतिनाथ प्रगट हो गए हैं। तब महाविष्णु को साथ लेकर ब्रह्माजी उस स्थान पर पहुँचे। वहाँ उन लोगों ने गड्ढे में असहनीय तेज का दर्शन पाया।

"सुनिर्माय नवं लिंगं ब्रह्मा शिलामयं शिवम् ॥
सवेदिकं छपञ्चास्यं सर्वलक्षण लक्षितम् ॥
स्थापितवान् मुदा भक्त्या ज्योतिर्लिङ्गवे परीध्रुवम् ॥
स्वात्मापिधानकं लिङ्गम् सिद्धम् मणिमयं परम् ॥
संस्थापित तथा भूयो विष्णुना प्रभविष्णुना ॥
इन्द्रनीलमयंग्रावं लिङ्गं तदुपरि ध्रुवम् ॥
विष्वात्मकं महालिङ्गं सर्वलोकैः प्रलक्ष्यते ॥
सर्वाधस्तेजसां पुञ्ज सर्वभूतैरगोचरम् ॥
सर्वदा दृश्यते लोकैर्विष्णुना स्थापितं शिवम् ॥
शिलामयं महालिङ्गं पञ्चव्यूहं तदात्मकम् ॥
पशुपतिर्महालिङ्गं ब्रह्माविष्णु शिवात्मकम् ॥
उमा महेश्वरं लिंगं सर्वदेवालयं बभौ ॥" (हि. ख. ७७ अ.)

ब्रह्माजी ने उस ज्योतिर्लिङ्ग के उपर संपूर्ण शुभ लक्षण से युक्त पंचमुखी रत्नमय पाषाण लिङ्ग, जलहरि बनाकर भक्तिपूर्वक सभी को सहज दर्शन होने योग्य स्थापित किया। रत्नमय लिङ्ग से ढकने पर भी ज्योतिर्लिङ्ग का तेज कम नहीं हुआ। तब सर्वसमर्थ महाविष्णु ने इन्द्रनीलमणि का वैसा ही लिंग बना कर उसके ऊपर स्थापित किया। वर्तमान में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसी नीलमणिमय लिंग का दर्शन प्राप्त होता है, लेकिन तेज का दर्शन नहीं मिलता। क्योंकि वह गुप्त रूप से स्थित है।

[जिस मंदिर में पशुपतिनाथ का ज्योतिर्लिङ्ग स्थित है, उस स्थान पर लगे संगमरमर तथा पत्थर शीत ऋतु में भी ठंडे नहीं लगते, एवं दक्षिण द्वार पर तो भक्त मनुष्य को थोड़ा ताप का भी अनुभव होता है। इससे यह सिद्ध होता है कि पशुपतिनाथ का लिंग कोई साधारण लिंग नहीं, अपितु पुराणों में वर्णित ज्योतिर्लिङ्ग ही है।]

भगवान् पशुपतिनाथ के प्रगट होने के बाद सुवर्ण पुरी भी प्रगट हुआ। यह समाचार तीनों लोक में फैल गया। शिव का प्रत्यक्ष दर्शन न पाकर छटपटाए हुए देवता, ऋषि-गण–सभी आ-आकर पवित्र वाग्मति नदी में स्नान कर पशु-पतिनाथ का दर्शन करने के बाद अत्यन्त प्रसन्न हुए। फिर सभी देव-देवता-ऋषिगण वहीं रह कर शिव को सेवा करने लगे।

एकदिन पार्वती जी ने भगवान पशुपतिनाथ से पूछा— "ब्रह्मा-विष्णु का झगड़ा समाप्त करने तथा जगत के कल्याण के लिए ज्योतिर्लिङ्ग रूप में आप यहाँ विराजमान हैं। आपके इसी लिंग में संपूर्ण जगत की उत्पत्ति होती है, और लीन होते हैं, संपूर्ण ब्रम्हाण्ड मेरा ही स्वरूप है—यह सब जो बात आप करते हैं, क्या सभी सत्य हैं या केवल अर्थवाद है?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इसके बाद शिव ने पार्वतीजी को अपने तत्व के बारे में समझाया। और नक्षत्रादि, तारों और सूर्यादि ग्रहों को अपने 'ईशान' मुख में लय कर लिया। ऋषि मुनि, शक्ति और ब्रम्हा आदिको पूर्व स्थित 'तत्पुरूष' मुख में समाविष्ट कर लिया। लक्ष्मी तथा विष्णु को गणों सहित दक्षिण स्थित 'अघोर' मुख में लीन कर लिया। विघ्नगण, तथा शक्तियों से युक्त गणेशजी को पश्चिम स्थित 'सद्योजात' मुख में गुप्त कर लिया। इसी प्रकार समस्त चराचर जगत पशुपतिनाथ में लीन हो गए।

विशालनगर (स्वर्णपुरी)

(हिमवत्खण्ड अ. १६१, ६२, ६३, पर आधारित ऐतिहासिक कथा)

त्रेता युग के अन्त में एवं द्वापर युग के प्रारंभ में पशुपतिनाथ के पूर्व स्थित जंगल में वितण्ड नामक एक म्लेच्छ था। वह अत्यन्त धनी, साथ ही क्रोधी था। उसे माँस बहुत प्रिय था। उसका 'रूक्ष' नामक एक सेवक था। उसका काम था वन में जाकर शिकार करना और अपने मालिक को शिकार लाकर देना। एक दिन, रोज की भाँति वह सारा जंगल घूमता रहा, शिकार की खोज में। घूमते-घूमते सूर्य डूबने लगा, लेकिन उसे कोई शिकार नहीं मिला। न उसे कुछ खाने को ही मिला। रात हो गई। रूक्ष अपने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मालिक के रुष्ट होने के डर से थरथर कांपता वापस लौटा। एक तो देर से लौटा, उस पर खाली हाथ। वितण्ड अत्यन्त क्रोधित होकर अपने सेवक को पीटने लगा और अन्त में उसे घर से निकाल दिया। रूक्ष भी कम नहीं था। वह आत्महत्या करने के उद्देश्य से पशुपति क्षेत्र तीर्थ में गया। उस तीर्थ के नजदीक जंगल में एक पापी राक्षस रहता था। वह बहुत दिनों से भूखा था। आधी रात को रूक्ष को देख कर वह उसे खाने दौड़ा। वाग्मति के तट पर दोनों के बीच घमासान युद्ध हुआ। परस्पर लड़ते-लड़ते दोनों अशक्त होकर गिर पड़े और दोनों का प्राणान्त हो गया। क्षेत्रीय तीर्थ पशुपतिनाथ के प्रभाव से राक्षस दूसरे जन्म में श्रीनाथ-जी के ईशान देश में किराती राजा के पुत्र के रूप में पैदा हुआ और किराती राजा बना। रूक्ष ने दिनभर उपवास किया था अतः धर्म के प्रभाव से वह कांचीपुरी में सूर्यवंशी राजा धर्मदत्त के रूप में पैदा हुआ। राज धर्मदत्त ने सौ वर्ष राज्य करने के बाद अपने दस पुत्रों के साथ काशी यात्रा के लिए प्रस्थान किया। काशी राज्य को देख कर धर्मदत्त को वैसा ही स्वर्ण नगर बसाने की इच्छा हुई। यात्रा समाप्त कर वह अपने देश लौटा, लेकिन उसके मन में स्वर्णपुरी स्थापित करने की इच्छा जाग्रत रही। एक दिन एक योगी-श्वर से उसकी मुलाकात हुई और उसने अपने मन का भाव प्रगट किया। उसकी बात सुनकर योगीश्वर ने राजा धर्म-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दत्त से कहा-थोड़ा सा परिश्रम करने से पाशुपत-स्वर्णपुरी राज्य प्राप्त हो सकता है। वहाँ भगवान् शिव और भगवती पार्वती निवास करते हैं। वे शीघ्र ही प्रसन्न होकर भक्तों की इच्छा पूर्ण करते हैं। इतना सुनते ही राजा धर्मदत्त अपना राजपाट अपने पुत्रों को सौंप कर सोना सहित योगीश्वर के साथ नेपाल क्षेत्र में आया। वह वज्रयोगिनी के निकट सुन्दरी तीर्थ में बालू का लिंग बना कर एक महीने तक तपस्या करता रहा। उसके तप से वाग्मति अत्यन्त प्रसन्न हुईं और उसे अनेक वरदान दिया। उस समय किराती कुल में जन्मा राक्षस शंकु नामक राजा के रूप में राज्य कर रहा था। उसने तीन हजार वर्ष तक राज्य किया था। उसे हरा कर राजा धर्मदत्त ने उसे राज्य से निकाल दिया और स्वयं वहाँ राज्य करने लगा। शंकु पराजित होकर वाग्मति तट पर रहने लगा और नित्य वाग्मति में स्नान करने लगा।

कुछ समय पश्चात् धर्मदत्त ने टोखा से लेकर सुन्दरी जल तक विस्तृत एक विशाल नगर का निर्माण किया। वहाँ सौ वर्ष राज्य करने पर भी पशुपति-स्वर्णपुरी के बारे में कोई ज्ञान नहीं था। क्योंकि स्वर्णपुरी के चारों ओर जंगल था। वहाँ हिंसक पशुओं के भय से कोई नहीं जाता था। एक बार, कार्तिक मास में, स्वर्णपुरी की ओर से बाजा बजने की मधुर ध्वनि सुनाई दी। जिसे सुनकर राजा धर्मदत्त को अत्यन्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आश्यचर्य हुआ। जंगल में कोई शत्रु सेना लेकर तो नहीं आया यह सोच कर धर्मदत्त अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर जंगल की ओर चला। जिधर से बाजे की ध्वनि आ रही थी, उधर जाते-जाते स्वर्णपुरी के नजदीक पहुँचा। स्वर्णपुरी को देख कर राजा को अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उसे स्वर्णपुरी पर राज्य करने की इच्छा हुई। शहर निरीक्षण करने जैसे ही वह भीतर प्रविष्ट होने को हुआ, क्षेत्रपाल भैरव भयंकर रूप धारण उसे मारने दौड़े। राजा धर्मदत्त डर के मारे भाग कर अपने राज्य वापस आया। लेकिन स्वर्णपुरी पर राज्य करने की इच्छा बनी रही।

एकदिन मार्कण्डेय ऋषि से उसकी मुलाकात हुई। राजा धर्मदत्त ने अपने मन की सारी बातें उन्हें बताया। ऋषि ने गुह्यकाली (गुह्येश्वरी भवानी) का अनुष्ठान करने की सलाह दी और विधि भी बताया। ऋषि के आज्ञानुसार राजा ने भगवती की आराधना करते हुए तपस्या की। कुछ ही समय बाद गुह्यकाली भवानी प्रसन्न हुई और अपने हाथ से राजा को खड्ग प्रदान करते हुए एक हजार वर्ष शिवजी के स्वर्णपुरी में राज्य करने का आशिर्वाद दिया।

तब राजा ने चतुरंग सेना लेकर स्वर्णपुरी पर चढ़ाई की। भैरवादि शिवगण और इन्द्रादि देवताओं के साथ उसका भीषण संग्राम हुआ। राजा के मंत्री और पुत्र देवताओं के साथ युद्ध में हार गए तो राजा स्वयं देवी-प्रदत्त खड्ग हाथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में लेकर युद्ध में उतरा। इन्द्रादि देवता भाग खड़े हुए। फिर गणेश और भैरवादि गणों के साथ राजा का भीषण युद्ध हुआ। युद्ध में राजा को मूर्छा आ गई। यह बात गुह्येश्वरी भवानी को ज्ञात होने पर राजा की ओर से योगिनियों को युद्ध करने भेजा। राजा के मृत सैनिकों को गुह्यकाली ने जल छिड़क पुनः जीवित किया। योगिनीयों को युद्ध में आया देख भैरवादि गण भाग कर पशुपतिनाथ के शरण में गए। तब शिवजी कहते हैं :"मेरे क्षेत्र में आकर तपस्या करने के कारण धर्मदत्त अवश्य ही यहाँ एक हजार वर्षों तक शासन करेगा। अत तब तक चलो हम लोग काशी चल कर रहें।" शिवजी की ऐसी आज्ञा सुनकर उनके गण और सभी देवतादि शिवजी के साथ काशी जाकर रहने लगे।

धर्मदत्त अपने राजकुमारों, मंत्री आदि के साथ देवताओं के बड़े-बड़े महल और रत्नादि खजाना पाकर आनन्दपूर्वक स्वर्णपुरी में राज्य करने लगा। उसने टोखा से लेकर वज्रयोगिनी तक और दक्षिण में शंखमूल तक विस्तृत एक विशाल नगर राजधानी के रूप में बसाया। अत्यन्त विशाल होने के कारण इसका नाम ही विशालनगर पड़ा। धर्मदत्त ने एक हजार वर्षों तक धर्म की रक्षा करते हुए विशालनगर में राज्य किया। इसके राज्य में अधर्म का नामोनिशान नहीं था।

एक हजार वर्ष के बाद देवतागण फिर स्वर्णपुरी में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वापस आए और धर्मदत्त को वहाँ से निकालने की कोशिश की। लेकिन धर्मदत्त अत्यन्त धर्मात्मा होने के कारण किसी ने भी देवताओं की मदत नहीं की। दुःखी होकर देवतागण गुह्यकाली के शरण में गए। भगवती गुह्यकाली ने शिवजी द्वारा राजा धर्मदत्त को ज्ञानोपदेश दिलाया। तब धर्मदत्त अपने पुत्र सूर्यकेतु को राजपाट देकर स्वयं शिवजी द्वारा भेजे गए 'शैवी विमान' में चढ़कर अखंड कैलाश की ओर प्रस्थान किया। तब देवता और ऋषिगण अपने इच्छानुकूल आनन्द के साथ स्वर्णपुरी में रहते हुए शिवजी की सेवा करने लगे।

वाग्मति-स्नान फल

वाग्मति के जल से घड़ा भरकर जो कोई मनुष्य भक्ति-पूर्वक भगवान को स्नान कराता है, वह अपने कोटि कुल का उद्धार करता है। जितनी बूँद से वह भगवान को स्नान कराता है, वह उतने ही वर्षों तक शिवलोक में आनंद के साथ रहता है।

"वाग्मत्याः सलिलं योहि घटेनोध्दृत्य शंकरम् ॥
स्नापयेद् भक्ति भावेन तस्य पुण्यफलं शृणु ॥
यावत्तदंभसांबिंदु स्तावत्कालं समैककम् ।
कोटिपितृन् समुध्दृत्य शिवलोके प्रमोदते ॥" (हि. ख ७२ अ.)

भक्ति और श्रद्धा से युक्त होकर वाग्मति का एक घड़ा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जल मेरे स्नान के लिए जो भी उठाता है, मुझे स्नान कराता है, वह अश्वमेध का फल प्राप्त कर उस घड़े में जितने विन्दु जल रहता है: उतने हो वर्ष शिवलोक में आदर सत्कार के साथ रहेगा ।

"यस्तस्यावारिणा पूर्णमेकं वा घटेमुद्धरेत् ॥
स्नायनार्थं च मे देवा भक्ति श्रद्धायुतोबुधः ॥
अश्वमेधफलं प्राप्य ममलोके महीयते ॥
अंभसां विन्दवो यावत्तावद्वर्षाणि संख्यया ॥" (हि. ख. ८३ अ.)

वाग्मति में स्नानादि करके पवित्र होकर बिना राग द्वेष के भक्तिपूर्वक वाग्मति के एक घड़ा जल से जो मुझे स्नान करायेगा, वह विधिपूर्वक किया गया अग्निहोत्र यज्ञ का फल प्राप्त करेगा ।

"यस्तस्या वारिणा पूमेकं च घट मुद्धरेत् ॥
स्नायनार्थं मम शुचिः श्रद्धधानो न सूयकः ।।
आहृत्तस्याऽग्निहोत्रस्य यत्फलं तस्यतद्भवेत् ॥" (व. पु.)
"वाग्मत्याः सलिले स्वकीय चरणौसंस्पृश्य रोगार्दितः ॥
प्राणैः कण्ठ गतोऽपिपासर जनो मुंचान्त्य सून्रतत्तटे ॥
सोऽन्ते योग सुगम्यमान पदवीं प्राप्नोति हृद्यं शिवम् ॥
वाञ्छन्ति त्रिदशहि ताद‍ृश गतिं धीराः जनाः किं पुनः ॥"

भगवान् पशुपतिनाथ को घो से अभिषक करने पर शिवलोक प्राप्त होता है। दूध से अभिषेक करने पर चन्द्रलोक की प्राप्ति होती है । गर्म पानी से अभिषेक करने पर सूर्यलोक की प्राप्ति होती है । और ठण्डे पानी से अभिषेक करने पर निष्पाप होकर वरुण लोक की प्राप्ति होती है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराह पुराण में वर्णित शिव-वचन के अनुसार—

"दध्नाक्षीरेण मधुनार्सर्णिषा सलिलेन वा ॥
स्नपनंये प्रयच्छान्ति ते तरन्ति जरान्तन्तकौ ॥"

जो मनुष्य दूध, दही, मधु और घी से अथवा जल से शिवजी का अभिषेक करता है, वह जन्म मरण से मुक्त हो जाता हैं ।

वाग्मति स्नान और शिवपूजन फल

भगवान शिव कहते हैं :

"वाग्मत्यामत्र ये स्नात्वा मामर्चयन्ति सन्ततम् ॥
उद्धारिष्यामि तान् प्रीत्या घोरात् संसार सागरात् ॥" (हि ख. ८३ अ.)

अर्थात् पाशुपत क्षेत्र वाग्मति में स्नान करके जो मेरा नित्य पूजन-अर्चन करता है, उसका मैं प्रीतिपूर्वक घोर संसार-समुद्र से उद्धार करता हूँ ।

"स्रवन्तीनां वरा पुण्या वाग्मती पर्वतोत्तमात् ॥
स्नात्वा स्नात्वा तु ये यत्र नित्यमभ्यर्चयन्ति माम् ॥
उद्धराम्यहमेत्तान् वै प्रीतः संसार सागरात् ॥" (वराहपुराण)

अर्थात् पर्वतों में श्रेष्ठ हिमालय से निकली नदियों में श्रेष्ठ वाग्मति में स्नान करके जो मेरी पूजा करता है, उन्हें मैं खुश होकर घोर संसार-सागर से मुक्त करता हूँ ।

वाग्मति स्नान और पशुपतिदर्शन फल

वाग्मति में स्नान करके मृगेश्वर का स्पर्श करके भक्ति-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्वक जो मनुष्य श्रीनाथ का दर्शन करता है, वह निष्पाप होकर शिवलोक में जाता है। भक्तिपूर्वक नित्य वाग्मति में स्नान करके पशुपतिनाथ का दर्शन करनेवाला इस संसार-सागर से मुक्त होता है।

"शिवगंगा जलाप्लावी संस्पृश्यपशुविग्रहम् ॥
पश्यन्पशुपतिं भक्त्या निष्पापः शंकरं व्रजेत् ॥" (हि. ख.)
"वाग्मत्याः सलिले स्नात्वा ये मां पश्यन्ति भक्तितः ॥
तेषांमुक्तिर्भवेन्नित्यं घोरात् संसार सागरात् ॥" (व. पु.)

पशुपतिनाथ के दर्शन मात्र से पशुजन्म नहीं होता

"ये पश्यन्ति शिवं साक्षात् पंचव्यूहं शुभाननम् ॥
श्रद्धया ऽश्रद्धयावापि तेषां पुण्यफलं शृणु ॥
सर्वजन्मार्जितैः पापैश्चतुर्विधोद्भवैश्वते ॥
मुच्यन्ते तत्क्षणाम्नूनं ज्ञानाज्ञान कृतैरपि ॥
सर्वयज्ञफल लब्ध्वा सर्वदानोद्भवं तथा ॥
धर्मोपवासपूजां स शिवलोके महीमते ॥" (हि. ख. ७७ अ.)

अर्थात् जो मनुष्य पंचमुखी शिव का भक्तिपूर्वक दर्शन करता है, वे जाने अनजाने में किए पूर्व जन्म के सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं। और सभी प्रकार के यज्ञ, दान, व्रत और उपवास का फल पाकर शिवलोक में पूजित होते हैं।

'नेपाल महात्म्य' में लिखा है :—

"ये मां पशुपतिं देवा द्रक्ष्यन्ति मनुजा भुवि ॥
पशुजन्म न तेषान्तु मत्प्रसादाद्भविष्यति ॥"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संसार में जो कोई मेरा दर्शन करता है, मेरी कृपा से उसे पुनः पशु जन्म नहीं लेना पड़ता। ऐसा शिवजी कहते हैं।

"यः पश्यत्यनिशंगत्वा पशुपतिं च तत्रवै ॥
नरो ऽसौ भक्ति भावात्मा जीवन्मुक्तो न संशयः ॥" (हि. ख.)

भक्ति-भाव से युक्त जो मनुष्य हर समय पशुपतिनाथ का दर्शन करता है, वह जीवनमुक्त हो जाता है। इसमें कोई शंका नहीं है।

शिवजी आज्ञा करते हैं :—

"तत्रा ऽहं यै सकृद् दृष्टो विधिवल्दन्दितस्तु यैः
गत्वा शिवपुरं ते मां द्रक्ष्यन्ते दग्धकिल्विषाः ॥" (व पु.)

जो मनुष्य विधिपूर्वक एक बार भी पशुपतिनाथ का दर्शन करता है, वह सभी पापों से मुक्त होकर शिवलोक में जाकर मेरा प्रत्यक्ष दर्शन पाता है। अर्थात् वे मनुष्य नरक के भागी नहीं होते। वरन् कैलाशपद प्राप्त करते हैं।

"प्रणम्यदण्डवद्भु मौ नमस्कारेणयोर्चयेत् ॥
स यांगतिमवाप्नोति न तां यज्ञ शतैरपि ॥" (हि. ख. ७७ अ.)

जो सास्टांग दण्डवत् रूप नमस्कार सेवा करता है, उसे जो गति प्राप्त होती है, वह सौ यज्ञ करने से भी नहीं प्राप्त होती।

इसी प्रकार—

"अंगप्रदक्षिणं यस्तु करोतिमम भक्तिमान् ॥
रूपवान् भवते ऽत्यन्तं वज्रसँहनोऽ पिवा ॥" (पशुपति पुराण)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जो भक्तिमान् पुरुष मेरा अंगप्रदक्षिणा करता है, वह अत्यन्त सुन्दर और वज्रसमान शरीर वाला होता है।

"भक्त्या प्रेक्ष्यन्मेलिङ्ग दण्डवत् पातयेत्तनुम् ॥
तिर्यक्योनी: परित्यज्य दु:खसंसार तस्तरेत् ॥"

(हि. ख. १५८ अ.)

जो मनुष्य सिर झुका कर मेरे ज्योतिर्लिङ्ग स्वरूप का दर्शन करता है, प्रणाम करता है वह पशुयोनि से छुटकारा पाकर दु:खरूप संसार से पार हो जाता है।

"वन्दते परयाभक्त्या यो मामंत्र दिवौकस: ॥
सार्वभौमो भवेद्रारा सर्वलोक नमस्कृत: ॥" (हि॰ ख.)

जो मनुष्य प्रतिदिन मुझे अत्यन्त भक्ति के साथ प्रणाम करता है, वह पृथ्वी में सार्वभौम सर्वमान्य होता है।

इसी भाव को वराहपुराण में ऐसे व्यक्त किया गया है–

"वन्दते परयाभक्त्या यो मां तत्र नर: सदा ॥
पृथ्वीव्यां स भवेद्रा जा सर्वलोक नमस्कृत: ॥"

× × ×

भगवान पशुपतिनाथजी का दर्शन एवं उनके नगर में जाकर एक बार भी प्रणाम करने वाले को फिर से पशुयोनि में जन्म नहीं लेना पड़ता।

"सकृदपि नमंगला तत्पुरे पशुप-प्रभुम् ॥
सर्वं पुण्यं फलं लब्ध्वा विभक्त: पशुयोनिषु ॥" (हि. ख. ७२ अ.)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रदक्षिणा, धूप-दीप दान का फल

भगवान् शिव ब्रह्माजी से कहते हैं कि जो मनुष्य भक्ति भाव से मेरी आधी प्रदक्षिणा भी करता है, वह इस लोक में सुखपूर्वक रहता है, सर्व पापों से मुक्त होकर अन्त में मेरे लोक को प्राप्त होता है।

"भक्त्या प्रदक्षिणां कृत्वा पशुपतेर्यथाविधि ।।
अश्वमेध सहस्राणां तत्क्षणाल्लभतेफलम् ।।"
"परिक्रमति यो भक्त्या लिंगं पशुपतिपरम् ।।
सर्वजन्मार्जितैः पापैर्मुक्तः परं संगच्छति ।।"
"अर्धप्रदक्षिणां धातः करिष्यति च भक्तमान् ।।
स रूपवान भवेदत्र निष्पापो मत्पुरं व्रजेत् ।।" (हि ख.)

भगवान् पशुपतिनाथ को धूप जला कर अर्पण करने वाला अनेक जन्मों के पापों से मुक्त होता है :—

"गुग्गुलं दहते यो मे माना धूपांश्च भक्तिमान् ।।
जन्मान्तरै कृतैः पापैः समुच्यते नसंशयः ।।" (हि ख ७७ अ.)

दीपदान करने वाला जन्मजन्मान्तर तेजस्वी होता है :—

"यस्तु दद्यात्प्रदीपं मे समीपे श्रद्धयान्वितः ।।
सूर्य प्रभेषु देवेषु तस्योत्पत्तिर्विधीयते ।।" (व. पु. २१५ अ.)
"दीपवृक्षं तु यो दद्याद्भवने मम शोभने ।।" (हि ख. ८३ अ.)

भगवान् सदाशिव कहते हैं :—

भक्तिपूर्वक मेरे समीप जो दीपदान करता है, वह सूर्य के समान तेजस्वी होकर देवताओं के मध्य वास करता है। मेरे मंदिर में जो दीपमाला या महादीप जलाता है, वह मनुष्य हर जन्म में तेजस्वी होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्तुति, जप एवं नैवेद्य अर्पण का फल

"सर्वयज्ञोपवासेषु सर्वतीर्थेषु यत्फलम् ॥
स्तुतिजप्योपहारेण सर्वतत्फल माप्नुयात् ॥" (हि ख. ७७ अ.)

संपूर्ण यज्ञ, व्रत और संपूर्ण तीर्थयात्रा करने से जो फल प्राप्त होता है, वह फल भगवान् पशुपतिनाथ की स्तुति और उनके मंत्र जपने और उनको नैवेद्य अर्पण करने से प्राप्त होता है।

पुनः शिवजी कहते हैं :—

"अत्रार्चनैः स्तवैर्योमां जप्यैर्भजति वा जलैः ॥
स्वकुलानि समुध्दृत्य स योगी मयिलीयते ॥" (हि. ख. १५७ अ.)

इस पवित्र स्थान में आकर जो मेरी पूजा, स्तुति, तथा जलस्नान द्वारा मेरी सेवा करता है, वह भक्त अपने कुल का उद्धार कर ज्ञानी होकर मुझ में लीन हो जाता है।

जागरण, गायन-वादन (भजन) फल

शिव कहते हैं :—

"गीतवादित्र नृत्यस्तु स्तुतिभिर्जागरेणवा ॥
ये मे कुर्वन्ति सेवां वै मत्संम्थास्ते भवन्ति हि ॥" (व पु.)
"गीतवादित्र नृत्यैश्च स्तुतिभिर्जागरेणवा ॥
ये मे कुर्वन्ति सेवां ते गमिष्यति ममालयम् ॥" (हि. ख ८३ अ)

जो मनुष्य गायन-वादन, नृत्य और अनेक प्रकार से स्तुति करते हुए जागते रह कर मेरी सेवा करता है, वह मेरे लोक में स्थान प्राप्त करेगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पशुपति नाम जप का फल

"पशुपति रितिप्राज्ञो यो ब्रूयाद्भूत्य भक्तितः ।।
क्रोधान्मोहाद्भयादंद्भात्स मुक्तो लीलयाऽपिवा ।।"
(हि. ख. ७२ अ.)

जो मनुष्य भक्तिपूर्वक, या अभक्तिपूर्वक, क्रोध, मोह (अविवेक), भ्रम, दंभ, घमण्ड या खिलवाड़ से भी 'पशुपति-पशुपति' कह कर मेरा नाम लेता है, वह मुक्त हो जाता है।

"यो भोजये द्विजांस्तत्र शिवमुद्दिश्य भक्तितः ।।
क्षितौ सर्वसुखं भुत्त्वा शिवलोकं सगच्छति ।।" (हि. ख ७२ अ.)
"यो दद्याद् भोजनं भक्त्या विप्रेभ्यः श्रद्धयान्वितः ।।
सोऽमृताशी भवेत्स्वर्गे भूषितोऽमर पूजितः ।।" (हि ख ८३ अ.)

जो मनुष्य शिव को ध्यान में रख कर भक्तिपूर्वक ब्राह्मणों को भोजन कराता है, वह पृथ्वी पर समस्त सुख भोग कर स्वर्ग में देवमान्य होकर शिवलोक में स्थान प्राप्त करता है। अर्थात् देवतातुल्य हो जाता है।

पाशुपत क्षेत्र में ब्राह्मणों को दान का महत्व

"यत्किंचिद्दीयते दानं कामेन परमार्थतः ।।
तत्सर्वमक्षयं लब्ध्वा तत्तल्लोके सगच्छति ।।
'स्वल्पमप्यत्र यत्किंचित् द्विजेभ्यो दीयतेधनम् ।।
तद्क्षयं भवेदाशु दानं पुण्यं फलंमहत् ।।" (हि ख ७२, ८३ अ.)

फलेच्छा से वा निष्काम होकर जो ब्राम्हणों को यथाशक्ति दान करता है, वह महान् पुण्य प्राप्त करके, जिस-जिस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वस्तु का दान किया है, उसे देवता स्वरूप बन कर तत्लोक में प्राप्त करता है।

नेपाल पुण्यभूमि का कभी त्याग न करें

"यत्रै वं पशुपो विष्णुर्गुह्येश्वरी पितामहः ॥
वाग्मति मोक्षदा देवी कथंत्याज्य मिदंपरम् ॥" (हि. ख. ७३ अ)

संपूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाले साक्षात् ज्योतिर्लिङ्गरूप शिव, चम्पकनारायण (चांगुनारायण), गुह्यकाली, ब्रम्हा, मुक्तिदायिनी वाग्मति और अन्य देवताओं समेत द्वारा निवास किये गये परम पवित्र नेपाल क्षेत्र का बयान कौन कर सकता है ? इस भूमि को आज तक देवता, ऋषि-मुनियों ने भी नहीं त्यागा है, तो मनुष्य कैसे छोड़ सकता है ? अर्थात् कदापि न छोड़ें। जिस स्थान पर :

"वाग्मति पश्चिमतिरे सर्वदेवतायः क्षितौ ॥
ज्योतिरूपी मुने साक्षातपशुपतिर्विराजते ॥"
"अव्यक्तं परमं लिंगं प्रकाशतेह्यहर्निशम् ॥
दीप शिखा कृति तच्च योगिंभिरेवदृश्यते ॥"
(हि. ख. ६९-७२ अ.)

नेपाल क्षेत्र में वाग्मति तट पर प्रत्यक्ष ज्योतिस्वरूप पशुपतिनाथ विराजमान हैं। यह ज्योति गुप्त होते हुए भी हर हर समय दीपशिखा की भाँति स्वयं प्रकाशवान् है। उनके साक्षात् ज्योति स्वरूप का दर्शन सिद्ध योगी महात्मा ही पाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वे मनुष्य धन्य हैं जिन्होंने पशुपतिनाथ का साक्षात् दर्शन किया है। मनुष्य योनि पाकर जिसने वाग्मति स्नान नहीं किया एवं साक्षात् परमब्रम्ह-ज्योतिर्लिङ्ग-स्वरूप पशुपतिनाथ का दर्शन नहीं किया, वह अनेक पशुयोनि में चक्कर खाता रहता है :—

"धन्यास्त एव मर्त्याश्च दृष्टः पशुपतिश्च यैः ॥
मानुष्ये ये न पश्यन्ति ज्योतिर्लिङ्ग परात्परम् ॥
वाग्मत्यां स्नपयन्भक्त्या पशुयोनिष्यटन्तिते ॥" (हि. ख. ७२ अ.)

पशुपतिनाथ केदारनाथ के शिरोभाग हैं

पशुपतिनाथ केदारनाथ के शिरोभाग हैं, अर्थात् केदार और पशुपति मिलकर एक ज्योतिर्लिङ्ग बने हैं। अतः केदारनाथ का दर्शन करने के पश्चात् पशुपतिनाथ का दर्शन अवश्य ही करना चहिए। तभी पूर्ण फल प्राप्त हो सकता है। शिव पुराण में उल्लिखित है :

"नयपालालाख्यपुर्यां तु प्रसिद्धायांमहीतले ॥
लिङ्गं पशुपतीशाख्यें सर्वकामफलप्रदम् ॥
शिरोभाग स्वरूपेण शिवलिङ्ग तदस्तिहि ॥"

अर्थात् सुप्रसिद्ध नेपाल नामक नगरी में सर्वकाम-फल-प्रद पशुपति ज्योतिर्लिङ्ग जो है, वह केदारजी का शिरोभाग है। यह बात सूतजी ने शौनकादि ऋषियों को बताया था।

पाशुपतक्षेत्र नेपाल में मृत्यु होने पर

पाशुपत क्षेत्र नेपाल में जहाँ कहीं भी मृत्यु होने पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शिवसायुज्य प्राप्त होता है। हिम्वत्खंड अध्याय ७१-७२ में वर्णित है :—

"मृयते यत्रकुत्रापि क्षेत्रे पाशुपते वरे ॥
ब्रह्मादिलोकं भुत्त्वा स शिवेन सहमोदते ॥
"यो मृतो यत्र कुत्रापि क्षेत्रे पाशुपते नरः ॥
विधूय सर्वपापानि शिवलोकं सगच्छति ॥"

कलियुग में यहां क्या-क्या हुआ ?

कलियुग के प्रारंभ के साथ-साथ सुवर्णपुरी मृण्मय नगरी बन गया अर्थात् नष्ट हो गया। देवतागण भी गुप्त हो गए। कुछ समय पश्चात् यहाँ किरात और बौद्धों का प्रभाव बढ़ने लगा। शिवपूजा आदि सभी वैदिक कर्म बन्द हो गए। लोग खाना खाकर जूठा आदि पशुपतिनाथ के मंदिर की ओर फेंकते थे, इसलिए इस स्थान का नाम उच्छिष्टेश्वर भी पड़ा। इस प्रकार वैदिक सनातन धर्म की अवनति होती गई।

कुछ समय पश्चात् भारत में शंकराचार्य का जन्म हुआ। उन्होंने यहाँ आकर बौद्धों को शास्त्रार्थ में पराजित किया। पशुपतिनाथ का पूजन पुनः आरंभ हुआ। शंकराचार्य ने कुछ समय तक स्वयं पूजा किया तथा विमलानन्द नामक अपने शिष्य को पूजा का भार सौंप कर स्वयं अन्यत्र वैदिक धर्म प्रचार के लिए निकल पड़े। एक दिन राजा पशुपतिनाथ के मंदिर में दर्शन करने आए। विमलानन्द स्वामी ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भगवान् का पूजन कर उन्हें (लिंग को) प्रणाम करने के बजाय अपने दण्ड से स्पर्श कराया। इसे देखकर राजा को आश्चर्य हुआ और उन्होंने दण्डीस्वामी से कारण पूछा। स्वामीजी ने उत्तर दिया कि हमारी विधी में प्रत्यक्ष प्रणाम न कर दण्ड से स्पर्श करने का विधान है। यह सुनकर राजा को विश्वास नहीं हुआ और उन्होंने इसे पशुपतिनाथ का अपमान समझा। उन्होंने दण्डीस्वामी को आज्ञा दी कि वे लिंग को प्रणाम करें। दण्डीस्वामी ने आज्ञा नहीं मानी और कहा कि ऐसा करने से अनर्थ हो सकता है। जब राजा नहीं माने, तो दण्डीस्वामी ने बाहर आकर कीर्तिमुख भैरव तथा धर्मशिला को प्रणाम किया। तत्काल ही दोनों खण्डित हो गए। तब राजा को विश्वास हुआ और उन्होंने दण्डीस्वामी से क्षमा मांगा।

तब दण्डीस्वामी ने कहा कि आज से पशुपतिनाथ की पूजा गृहस्थ ब्राम्हण करेंगे। राजा ने रामेश्वरम् से ब्राम्हणों को बुलवा कर यहां का पुजारी नियुक्त किया। तब से श्री-नाथजी की पूजा रामेश्वरम् के भट्ट ब्राम्हण करते चले आ रहे हैं।

पशुपतिनाथ दर्शन-क्रम

सर्वप्रथम आर्यातीर्थ में स्नान कर श्री गुह्येश्वरी का दर्शन करना चाहिए। तत्पश्चात किरातेश्वर, गोरखनाथ,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजेश्वरी, वत्सला, जयमंगला, क्षेत्रपाल कीर्तिमुख, भैरव, नन्दी, भृंगी, वासुकी, लालगणेश, आदि का दर्शन करने के बाद ही पशुपतिनाथ का दर्शन करना चाहिए लोगों का ऐसा कहना है। परंतु ऐसा नहीं है। क्रम निम्नलिखित है :—

सर्वप्रथम आर्यघाट वागमति में स्नान कर मृगेश्वर महादेव को जल चढ़ाना चाहिए। गौरीघाट में स्नान करने पर किरातेश्वर, गुह्येश्वरी का दर्शन कर मृगेश्वर में जल चढ़ाना चाहिए। तब वत्सला, आकाश भैरव, जयमंगला, राजेश्वरी, भष्मेश्वर का दर्शन करने के पश्चात् पश्चिम द्वार स्थित नन्दी का दर्शन करे। उत्तर द्वार स्थित भृंगीगण का दर्शन करे। पूर्व दिशा स्थित वासुकि नाग का दर्शन करे, लालगणेश का दर्शन करे। दक्षिण द्वार स्थित लालगणेश का दर्शन करे तथा क्षेत्रपाल उन्मत्त भैरव का दर्शन करने के पश्चात् पशुपतिनाथ के पंचमुखी ज्योतिर्लिङ्ग का दर्शन करना चाहिए। सर्वप्रथम दक्षिण मुख, फिर पूर्व मुख, फिर उत्तर मुख और पश्चिम मुख का दर्शन करने के पश्चात् उर्ध्व मुख का दर्शन करना चाहिए। इसके विपरीत क्रम से दर्शन करने पर पुण्य फलप्राप्ति के स्थान पर पाप लगता है।

चतुषष्टि शिवलिंग-यात्रा

नेपाल में चतुषष्टि (चौंसठ) शिवलिंग स्थित हैं। ऊपर वर्णित विधि के अनुसार पशुपतिनाथ का दर्शन करने के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पश्चात् विभिन्न क्षेत्र स्थित चतुषष्टि शिवलिंगों का दर्शन करना चाहिए। ये निम्नलिखित हैं :—

(१) आदिलिङ्ग 'कुशेश्वर' : यह शिवलिंग पूर्वी नेपाल के दुम्जा नामक स्थान पर स्थित है। यहाँ से दो मील पर लीलावती (रोसी नदी) और कौशिकी (स्वर्ण कोशी) नदी के संगम पर 'दुर्गा तीर्थ' स्थित है। इस स्थान का प्राचीन नाम 'चित्रकोट' पर्वत है। पीठ का नाम 'कुलपीठ' है।

(२) 'भीमेश्वर' महादेव : कुशेश्वर से तीन योजन दूरी पर दोलखा नामक स्थान पर स्थित है। इसके नैऋत्य कोण पर ताम्रकोशी और सुवर्णकोशी नदियों का संगम है। जहाँ 'देवतीर्थ' स्थित है। (आजकल इसे बेनीघाट कहते हैं।) इस स्थान को 'ताम्रचूड़' पर्वत कहा जाता है। इसके एक कोश दूर ताम्रकौशिकी और दोला नदी के संगम पर नाग-ह्रद तीर्थ, इसके उत्तर में त्रिपुरसुन्दरी का पवित्र और प्रसिद्ध मंदिर तथा पीठ स्थित है। यहाँ स्थित 'वाराणसी धारा' में स्नान करना अत्युत्तम माना गया है।

(३) 'कार्पेश्वर' महादेव : भीमेश्वर से तीन योजन पश्चिम (वर्तमान बाह्रबीसे ग्राम) में स्थित है। इसके सात धनु पश्चिम में स्वर्णकौशिकी और शैलवती के संगम पर 'स्वर्णतीर्थ' स्थित है। इस स्थान का प्राचीन नाम 'ककुदाद्रि' पर्वत है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) काश्यपेश्वर महादेव : कार्फेश्वर से तीन योजन पश्चिम (वर्तमान मण्डन ग्राम) में है। एक फर्लांग की दूरी पर गौरीकुण्ड और सरस्वती कुण्ड स्थित है। सरस्वती कुण्ड में कश्यप ऋषि ने स्नान किया था, अतः इसे कश्यप कुण्ड भी कहते हैं।

(५) 'स्फटिकेश्वर' महादेव : काश्यपेश्वर से एक योजन उत्तर में स्थित हैं। यहाँ से सौ धनु ईशान में चन्द्रकांति नदी और हिमश्रवा नदी के संगम में 'कांति तीर्थ' है। इस स्थान का नाम 'काकन्द' पर्वत है।

(६) 'चण्डेश्वर' महादेव : स्फटिकेश्वर से दो कोश पश्चिम (वर्तमान बनेपानगर) में स्थित है। इसके दक्षिण में रूपवती (चण्डेश्वरी) और रूद्रवती (पुण्यमाला) के संगम में 'उग्र तीर्थ' है। इस स्थान का नाम स्कन्दगिरी है।

(७) 'धनेश्वर' महादेव : चण्डेश्वर से एक कोश दक्षिण (वर्तमान बनेपा नगर) में स्थित है। इस स्थान को 'रौद्रगिरि' कहते हैं।

(८) 'विकटेश्वर' महादेव : धनेश्वर से ६००० धनु पश्चिम (वर्तमान सांगा जिले) में स्थित है। यहाँ कुछ दूरी पर तीन नदियों का संगम है। इसे 'पुण्यतीर्थ' कहते हैं। प्राचीन नाम 'द्रोणाचल' पर्वत है।

(९) 'इन्द्रेश्वर' महादेव : वर्तमान पनौति जिला में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थित है। यहाँ से पूरब थोड़ी दूर पर लीलावती, रुद्रवती, पद्मावती के संगम में 'शुचि तीर्थ' है। स्थान का प्राचीन नाम 'कुंज पर्वत' है।

(१०) 'भालेश्वर' महादेव : वर्तमान बिहावर ग्राम के निकट, इन्द्रेश्वर से एक कोस पश्चिम में स्थित है। यहाँ से कुछ दूर लीलावती और सुखश्रवा नदी के संगम पर 'गन्धर्व' तीर्थ है। यहाँ सती देवी के ललाट का पतन हुआ था। इस स्थान का प्राचीन नाम 'कुंज' पर्वत हैं।

(११) 'गुप्तेश्वर' महादेव : ललितपुर (काठमाण्डू) के फुल्चोक पर्वत पर भालेश्वर से दो कोस दक्षिण में स्थित हैं। यहाँ से थोड़ी ही दूरी पर नैऋत्य कोण में प्रभावती अरौ प्रभवा नदी का संगम सिद्धतीर्थ है। प्राचीन नाम 'कुजाद्रि' तीर्थ है।

(१२) 'तिलेश्वर' महादेव : ललितपुर के लेलेग्राम में, गुप्तेश्वर से एक योजन ईशान में स्थित है। एक फर्लांग की की दूरी पर वायव्य कोण पर मनोमती, प्रभावती, और सरस्वती के संगम पर 'मन.श्री' तीर्थ है। यहाँ भृगुकुण्ड, रुद्रकुण्ड, और सरस्वती कुण्ड भी हैं। प्राचीन नाम 'मुकुन्दगिरि' पर्वत है।

(१३) 'चम्पकेश्वर' महादेव : तिलेश्वर से २०० धनु (एक फर्लांग) की दूरी पर पश्चिम में स्थित है। यहाँ से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दक्षिण की ओर प्रभावती और सरस्वती का संगम है। इसे 'सरस्वती तीर्थ' कहते हैं। प्राचीन नाम 'सुन्दर' पर्वत है।

(१४) 'रामेश्वर' महादेव : ललितपुर के लेलेग्राम टीका-भैरव में स्थित है। यहाँ भी प्रभावती और सरस्वती नदी का संगम 'प्रभा' तीर्थ है। स्थान का प्राचीन नाम 'त्रिकुटाचल' पर्वत है।

(१५) 'कालेश्वर' महादेव : लेलेग्राम टंगन में स्थित है। इसके दो कोस दक्षिण में वैतरणी नदी और घराघर के संगम पर 'कालतीर्थ' है। प्राचीन नाम 'कासुन्द पर्वत' है।

(१६) 'नटारम्भेश्वर' महादेव : वर्तमान मकवानपुर जिले में कालेश्वर से तीन योजन की दूरी पर है।। यहाँ से एक कोस उत्तर महादेव नदी के मुहाने पर 'ब्रह्मतीर्थ' स्थित है। इस स्थान का प्राचीन नाम 'त्रिकुटाचल' पर्वत है।

(१७) 'उद्दालकेश्वर' महादेव : ललितपुर के फर्पिङ्ग टासीडोल में स्थित हैं। यहाँ से कुछ दूर दक्षिण में धर्मगंगा और रुद्रतीर्थ हैं। इस स्थान के पास ही 'कनखल' तीर्थ भी है। स्थान का प्राचीन नाम 'व्याघ्र तीर्थ' है।

(१८) 'गोपालेश्वर' महादेव : उद्दालकेश्वर से एक कोस उत्तर में स्थित है। यहाँ से आधे कोस पूर्व में शिखा-नारायण से गोपदी, शिखरिणी, यज्ञगंगा—इन तीन नदियों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का संगम 'गोपालतीर्थ' है। इस स्थान को 'मर्कटाचल पर्वत' कहते हैं।

(१९) 'चम्पकेश्वर' महादेव : गोपालेश्वर से छ कोस पश्चिम में (वर्तमान चिसापानी इलाका के चितलांग नामक स्थान पर) स्थित है। यहाँ से पूरब की ओर चन्द्रकांति नदी और पश्चिम में रत्नकाली नदी के संगम पर 'ब्रह्मतीर्थ' है। वाणासुर के मंत्री सुबाहु ने इन्हीं महादेव का आराधना किया था। स्थान का प्राचीन नाम 'वज्रपर्वत' है।

(२०) 'उन्मत्तेश्वर' महादेव : चम्पकेश्वर से तीन कोस पश्चिम स्थित है। इसके निकट पूरब दिशा में चित्रकांति नदी और स्वर्णावति नदी के संगम पर 'स्वर्णतीर्थ' है। इस स्थान का प्राचीन नाम 'मयूर पर्वत' है।

(२१) 'नन्दीकेश्वर' महादेव : यह उन्मत्तेश्वर दो फर्लांग आग्नेय कोण में स्थित हैं। इसके दक्षिण में रत्नकांति और स्वर्णप्रभा नदी के संगम पर 'नन्दी तीर्थ' है। प्राचीन नाम 'नन्द पर्वत' है।

(२२) 'गोखुरेश्वर' महादेव : नन्दीकेश्वर से एक कोस दूर नैऋर्त्य कोण में स्थित है। इसके आग्नेय कोण में 'गो-तीर्थ' है। इस स्थान का प्राचीन नाम 'कसेरू पर्वत' है।

(२३) 'पाण्डुकेश्वर' महादेव : गोखुरेश्वर से दो कोस पश्चिम में स्थित हैं। इसके वायव्य कोण में ऋक्षवाण पर्वत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से निकली रेविका नदी और पश्चिम भद्रकूट पर्वत से निकली रेतोवती नदी के संगम पर 'भद्रतीर्थ' है। यहाँ से दक्षिण स्थित ऋषेश्वर पर्वत से निकली नारायण नदी, पश्चिम से आई मत्स्यरूपा और भद्रतीर्थ से आई महादेव नदी का संगम स्थल 'नारदतीर्थ' कहलाता है। इस स्थान का प्राचीन नाम 'ऋक्षवाण' पर्वत है।

(२४) 'कूटेश्वर' महादेव : पाण्डुकेश्वर से एक योजन पश्चिम में स्थित है। इसके एक कोस वायव्य कोण में गण्ड-वती नदी और श्वेतकांति नदी का संगम 'गालवतीर्थ' है। यह स्थान 'चित्रकूट' पर्वत कहलाता है।

(२५) 'असितेश्वर' महादेव : कूटेश्वर से डेढ़ कोस पश्चिम में स्थित है। इसके पश्चिम में शङ्खवतो, भानुमतो और महेश नदियों के संगम स्थल पर 'असित तीर्थ' है। प्राचीन नाम 'सुभद्र पर्वत' है।

(२६) 'भैरवेश्वर' महादेव : असितेश्वर से डेढ़ योजन उत्तर में स्थित है। यहाँ सत्यवती (तादी) नदी और त्रिशूल-गंगा (त्रिशूली) नदी के संगम पर 'भैरवतीर्थ' है। इसका प्राचीन नाम 'नीलाकूट पर्वत' है।

(२७) 'ब्रह्मेश्वर' महादेव : भैरवेश्वर से एक योजन पूर्व में स्थित है। दक्षिण में मृगेन्द्र पर्वत से निकली ब्रह्मगंगा (लिखु) और ब्रह्मपदी नदी के संगम पर 'ब्रह्मतीर्थ' है। इस स्थान का प्राचीन नाम 'शृङ्गाचल' पर्वत है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२८) 'स्कन्देश्वर' महादेव : यह स्थान ब्रह्मेश्वर से डेढ़ कोस पूर्व 'चन्द्रकान्त्युपलाचल' पर्वत की तलहटी में स्थित है। इसके दक्षिण में चन्द्रदीप्ति नदी और सिद्धरसा के संगम पर 'स्कन्द तीर्थ' है।

(२९) 'शतरुद्रेश्वर' महादेव : काठमाण्डू से ईशान वाग्द्वार शिवपुरी में स्थित है। यहाँ मृगेन्द्रशिखर से निकली 'विश्वगंगा' और 'ज्येष्ठिला' के संगम पर 'नृसिंहतीर्थ' है।

(३०) 'काकेश्वर' महादेव : भक्तपुर काकेश्वरी मुहल्ले में स्थित है। यहाँ 'आकाशगंगा तीर्थ' और सुन्दरी देवी का पीठ है। इस स्थान का प्राचीन नाम 'शतकंकट पर्वत' है।

(३१) 'मणिचूडेश्वर महादेव ; काठमाण्डू से पूरब मणि-चूड़ पर्वत पर स्थित है। यहाँ 'मणिह्लदतीर्थ' है।

(३२) 'योगेश्वर' महादेव : मणिचूडेश्वर से एक कोस दक्षिण में वज्रयोगिनी की तलहटी में स्थित है। यहीं 'वज्र-योगिनी' का महान् पीठ है। दक्षिण दिशा में 'योग कुण्ड' और योगगंगा तीर्थ हैं। प्राचीन नाम 'मणिचूड़ पर्वत' ही है।

(३३) नारायणेश्वर महादेव : योगेश्वर से एक कोस पूर्व साँखु लप्से गाँव में स्थित है। यहाँ नारायणह्लद या कर्ण-ह्लद तीर्थ है। प्राचीन नाम 'गन्धमादन पर्वत' है।

(३४) ज्योर्लिंगेश्वर महादेव : नारायणेश्वर से आधा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कोस पश्चिम में स्थित है। दक्षिण भाग में रत्नवती और मणिमति के संगम पर 'योगतीर्थ' है। प्राचीन नाम 'कामधेनु पर्वत' है।

(३५) रत्नचूडेश्वर महादेव : सांगा पर्वत से उत्तर ज्योतिर्लिंगेश्वर से दो कोस पश्चिम महादेव या 'रत्नह्रद तीर्थ' में स्थित है। हर समय जलप्लावित होने के कारण लिंग का दर्शन नहीं प्राप्त होता। अतः ह्रद ही में पूजा होती है।

(३६) वागीश्वर महादेव : भक्तपुर वागीश्वरी में रत्नचूडेश्वर से एक कोस दक्षिण में स्थित है। यहाँ सौ धनु आग्नेय कोण में वीरगंगा और काभ्रे नदी के संगम में 'वीरह्रद' है। इसका प्राचीन नाम 'दोलागिरी' पर्वत है।

(३७) कीलेश्वर महादेव : वागीश्वर से दो कोस पश्चिम चांगु में स्थित हैं। दक्षिण दिशा में निकट ही 'शंखह्रदतीर्थ' है। इसी के निकट 'छिन्नमस्ता' नामक तीर्थ भी है।

(३८) वाल्मिकेश्वर महादेव : भक्तपुर हनुमानघाट में स्थित है। दो कोस आग्नेय कोण में भद्राचल पर्वत से निःसृत भद्रा नदी और वीरा नदी संगम में 'वीरह्रद तीर्थ' है। इस स्थान को 'शुभोद् पर्वत' कहते हैं।

(३९) मंगलेश्वर महादेव : भक्तपुर उलाछे टोल में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२८) 'स्कन्देश्वर' महादेव : यह स्थान ब्रह्मेश्वर से डेढ़ कोस पूर्व 'चन्द्रकान्त्युपलाचल' पर्वत की तलहटी में स्थित है। इसके दक्षिण में चन्द्रदीप्ति नदी और सिद्धरसा के संगम पर 'स्कन्द तीर्थ' है।

(२९) 'शतरूद्रेश्वर' महादेव : काठमाण्डू से ईशान वाग्द्वार शिवपुरी में स्थित है। यहाँ मृगेन्द्रशिखर से निकली 'विश्वगंगा' और 'ज्येष्ठिला' के संगम पर 'नृसिंहतीर्थ' है।

(३०) 'काकेश्वर' महादेव : भक्तपुर काकेश्वरी मुहल्ले में स्थित है। यहाँ 'आकाशगंगा तीर्थ' और सुन्दरी देवी का पीठ है। इस स्थान का प्राचीन नाम 'शतकंकट पर्वत' है।

(३१) 'मणिचूडेश्वर महादेव ; काठमाण्डू से पूरब मणिचूड़ पर्वत पर स्थित है। यहाँ 'मणिह्लदतीर्थ' है।

(३२) 'योगेश्वर' महादेव : मणिचूडेश्वर से एक कोस दक्षिण में वज्रयोगिनी की तलहटी में स्थित है। यहीं 'वज्र-योगिनी' का महान् पीठ है। दक्षिण दिशा में 'योग कुण्ड' और योगगंगा तीर्थ हैं। प्राचीन नाम 'मणिचूड़ पर्वत' ही है।

(३३) नारायणेश्वर महादेव : योगेश्वर से एक कोस पूर्व साँखु लप्से गाँव में स्थित है। यहाँ नारायणह्लद या कर्ण-ह्लद तीर्थ है। प्राचीन नाम 'गन्धमादन पर्वत' है।

(३४) ज्योलिंगेश्वर महादेव : नारायणेश्वर से आधा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कोस पश्चिम में स्थित है। दक्षिण भाग में रत्नवती और मणिमति के संगम पर 'योगतीर्थ' है। प्राचीन नाम 'कामधेनु पर्वत' है।

(३५) रत्नचूडेश्वर महादेव : सांगा पर्वत से उत्तर ज्योतिर्लिंगेश्वर से दो कोस पश्चिम महादेव या 'रत्नह्रद तीर्थ' में स्थित है। हर समय जलप्लावित होने के कारण लिंग का दर्शन नहीं प्राप्त होता। अतः ह्रद ही में पूजा होती है।

(३६) वागीश्वर महादेव : भक्तपुर वागीश्वरी में रत्नचूडेश्वर से एक कोस दक्षिण में स्थित है। यहाँ सौ धनु आग्नेय कोण में वीरगंगा और काभ्रे नदी के संगम में 'वीरह्रद' है। इसका प्राचीन नाम 'दोलागिरी' पर्वत है।

(३७) कीलेश्वर महादेव : वागीश्वर से दो कोस पश्चिम चांगु में स्थित हैं। दक्षिण दिशा में निकट ही 'शंखह्रदतीर्थ' है। इसी के निकट 'छिन्नमस्ता' नामक तीर्थ भी है।

(३८) वाल्मिकेश्वर महादेव : भक्तपुर हनुमानघाट में स्थित है। दो कोस आग्नेय कोण में भद्राचल पर्वत से निःसृत भद्रा नदी और वीरा नदी संगम में 'वीरह्रद तीर्थ' है। इस स्थान को 'शुभोद् पर्वत' कहते हैं।

(३९) मंगलेश्वर महादेव : भक्तपुर ठलाछे टोल में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थित है। दो सौ धनु पुर्व में नृत्यनाथ, अर्धनारीश्वर का मंदिर स्थित है। भद्र नदी में 'मंगल तीर्थ' है। प्राचीन नाम 'शुभोद पर्वत' है।

(४०) विमलेश्वर महादेव : भक्तपुर सिपडोल में स्थित है। पश्चिम दिशा में विमलगंगा और सिमलागंगा के संगम पर 'विमलोदक तीर्थ' है। इस स्थान का प्राचीन नाम 'निकुंज पर्वत है।

(४१) अनंतेश्वर महादेव : भक्तपुर अनंत लिंग में स्थित हैं। उत्तर दिशा में ऋषितीर्थ हैं। स्थान का प्राचीन नाम 'ऋष्याश्रम तीर्थ' है।

(४२) विश्वरूपेश्वर महादेव : भक्तपुर तर्सांगाल में स्थित है। समीप ही वृद्धगंगा तीर्थ है। इस स्थान का नाम भी ऋष्याश्रम तीर्थ ही है।

(४३) सोमेश्वर महादेव : भक्तपुर सोमलिंगटार में स्थित है। पूरब दिशा में कोशगंगा और पद्मा नदी के संगम पर सोमतीर्थ है। इस स्थान का प्राचीन नाम 'धर्मरूप शैल' है।

(४४) गोभराटेश्वर महादेव : ललितपुर लुभू ग्राम में स्थित है। आग्नेय कोण में चक्रवती और कामधेनु के सिंग से निकली गोश्रृंगी नंदी के संगम पर गोश्रृंग तीर्थ है। श्रृंगी ऋषि ने गोबर का लिंग बना कर तपस्या किया था, इसलिए इसका नाम 'गोभराटेश्वर' पड़ा। स्थान का प्राचीन नाम 'चक्रनेमि पर्वत' है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४५) शृंगेश्वर महादेव : ललितपुर सुनागुठी में स्थित है। दक्षिण दिशा में सौ धनु की दूरी पर सिद्धसरकुण्ड तीर्थ है। इसका प्राचीन नाम 'नागकूट पर्वत' है।

(४६) त्रिलिंगेश्वर महादेव : ललितपुर वहालुखा टोल में स्थित है। निकट ही ईशान कोण दिशा में मुनिकुण्ड तीर्थ है। स्थान का प्राचीन नाम 'ललितारण्य' है।

(४७) कुपितेश्वर महादेव : ललितपुर भीमसेन स्थान में स्थित है। इसके उत्तर में उदकतीर्थ और ध्रुवकुंड तीर्थ स्थित है। प्राचीन नाम 'ललितारण्य' ही है।

(४८) सर्वेश्वर महादेव : ललितपुर कुंभेश्वर मुहल्ले में स्थित है। इसके निकट ही ईशान कोण दिशा में कुंभेश्वर महादेव स्थित है। जिनकी महिमा का हिम्वत्खंड में विस्तृत वर्णन है। यहाँ गौरीकुण्ड तीर्थ और शिवगंगा तीर्थ है। प्राचीन नाम 'ललितारण्य' ही है।

(४९) गोलोकेश्वर महादेव : सर्वेश्वर से तीन कोस पश्चिम ललितपुर नैकाप ग्राम के निकट स्थित है। यहाँ से दस धनु पश्चिम में रूद्रतीर्थ और रूद्रतीर्थ से एक कोस दक्षिण में तक्षकह्रद, मीनतीर्थ हैं। स्थान का प्राचीन नाम नन्दभद्र शैल है।

(५०) चन्दनमण्टेश्वर महादेव : कीर्तिपुर इलाके में थानकोट के पास स्थित है। यहाँ से दक्षिण में मत्स्यनारायण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तीर्थ स्थित है। यहीं आसपास मातृतीर्थ, चन्दकूपतीर्थ, नवधारा, आदि हैं। नखु नदी और बलखु नदी के संगम पर भष्मतीर्थ है। स्थान का प्राचीन नाम चन्दागिरी पर्वत है।

(५१) यक्षेश्वर महादेवः काठमांडू के इचंगु हलचोक से पश्चिम आदेश्वर में स्थित है। विष्णुपदी नदी के संगम में यक्षतीर्थ और नंदिनी के संगम पर नन्दी तीर्थ है। ये देवता आदेश्वर नाम से भी प्रसिद्ध हैं। स्थान का प्राचीन नाम उसीरावीर पर्वत है।

(५२) चण्डकेश्वर महादेव : काठमांडू से उत्तर और टोखा के बीच जंगल में स्थित है। यहीं पिण्डारक तीर्थ है। चण्डकेश्वरी देवी का मंदिर भी है।

(५३) धर्मेश्वर महादेव : काठमांडू टोखा के साल वन में स्थित है। जेष्ठीला और धर्मगंगा के संगम पर धर्मतीर्थ है। स्थान का प्राचीन नाम मृगेन्द्र पर्वत है।

(५४) गोकर्णेश्वर महादेव : काठमांडू के सुप्रसिद्ध 'गोकर्ण' नामक तीर्थ में स्थित हैं। इसे पिताम्मह तीर्थ भी कहा जाता है। इस स्थान का महत्व पहले ही वर्णन किया जा चुका है। इस स्थान का प्राचीन नाम 'भुजवत पर्वत' है।

(५५) कोटेश्वर महादेव : काठमांडू के कुटिबहाल में स्थित है। यहाँ से आग्नेय दिशा में हनुमन्ते और मनोहरा के संगम में 'हनु तीर्थ' है। मनोहरा और वाग्मति के संगम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को शंखमूल तीर्थ कहते हैं, जिसका वर्णन पहले आ चुका है। स्थान का प्राचीन नाम मन्दर पर्वत है।

(५६) वाणेश्वर महादेव : काठमाडौं के बानेश्वर मुहल्ले में स्थित है। यहाँ से दक्षिण वाणगंगा तीर्थ है। इस स्थान को 'पारियात्र-पर्वत' कहते हैं।

(५७) ज्ञानेश्वर महादेव : काठमांडू के ज्ञानेश्वर मुहल्ले में स्थित है । यहाँ ज्येष्ठिला और धोबीला के संगम पर 'मयूर तीर्थ' है। इस स्थान का नाम 'उमा शैल' है।

(५८) पर्वतेश्वर महादेव : काठमाडौं में पशुपति मंदिर के निकट गौरीघाट कैलाश के मध्य में स्थित है। यहाँ गौरी-कुण्ड या उमाकुण्ड स्थित है।

(५९) जलेश्वर महादेव : भगवती गुह्येश्वरी के मंदिर से ईशान में अश्वत्थ वृक्ष के नीचे वाग्मति के जल में स्थित है। इसीलिए इस स्थान का नाम भी जलेश्वर तीर्थ पड़ा है।

(६०) गुह्येश्वर या सिद्धेश्वर : गुह्येश्वरी देवी के मंदिर से थोड़ी दूरी पर वायव्य कोण में ताम्र लिप्त लिंग है। यही गुह्येश्वर या सिद्धेश्वर महादेव हैं। इस स्थान को सिद्धाचल पर्वत कहते हैं।

(६१) किरातेश्वर महादेव : काठमांडौं में गौरीघाट से दक्षिणपूर्व पर्वत पर स्थित है। गौरीघाट में रूद्रसहस्र तीर्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। इस स्थान का ही सुप्रसिद्ध नाम श्लेष्मान्तक वन है जहाँ पशुपति भगवान ने किरात रूप धारण किया था।

(६२) भष्मेश्वर महादेव : काठमांडौं के देवपाटन इलाके में (पशुपतिनाथ के निकट) स्थित है। निकट ही वाग्मति में भष्मगंगा तीर्थ है। इस स्थान का प्राचीन नाम 'भष्मांचल पर्वत' है।

(६३) भुवनेश्वर महादेव : पशुपति देवपत्तन से पश्चिम में स्थित है। इसके निकट ही 'ज्ञानकुण्ड' तीर्थ है। इस कुण्ड में त्रिकाल स्नान करके भुवनेश्वर का एक वर्ष तक दर्शनपूजन करनेवालेका अज्ञान नाश हो जाता है, एवं वह ज्ञानी होता है। स्थान का प्राचीन नाम 'वृषभाचल पर्वत' है।

(६४) रूद्रागारेश्वर महादेव : पशुपतिनाथ मंदिर के उत्तर में स्थित है। यहां में आग्नेय कोण में 'रूद्रस्नानीदक' तीर्थ है। यहाँ स्नान करके वासुकि रूद्रागारेश्वर का दर्शन पूजन करने से विशेष फल की प्राप्ति होती है। स्थान का प्राचीन नाम 'धर्माञ्चल' पर्वत है।

उपरोक्त वर्णित धनुषष्ठी शिवलिंग यात्रा के बाद आर्य तीर्थ में स्नान करके श्री पशुपति-गुह्येश्वरी का दर्शन करके सांखु जाकर ने मुनि और वज्रयोगिनी का दर्शन, दान आदि करके ब्राह्मणभोजन कराने पर यात्रा पूर्ण होती है।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नित्यपाठ हेतु स्तोत्र

श्री ब्रह्माकृत् हरिणेश्वर स्तोत्रम् :

ब्रह्मोवाचः—

नमस्त्रैलोक्य नाथाय त्र्यम्बकाय नमोनमः ॥
हराय हरिकेशाय हेमवीर्यपरायच ॥१॥

रूद्रेश्वराय रूद्राय रूद्रवक्ष शिराय च ॥
व्यक्ताऽव्यक्त शरीराय जगतां सृष्टिहेतवे ॥२॥

कैलाशवासिने चैव मेरुमन्दर चारिणे ॥
हिमव द्वासिने चैव विन्ध्यादि निलयाय च ॥३॥

श्लेष्मान्तकवने रम्ये चक्रक्रीडा विधायिने ॥
मृगरूपं समास्थाय मृगमध्य विचारिणे ॥४॥

वरदानैकदक्षाय स्थित्यनुग्रहकारिणे ॥
त्राता ताणार्थिनां नित्यं नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते ॥५॥

नामभिर्विविधैः पुण्यैः स्तुत्वा त्रिभुवनेश्वरम् ॥
भगवान् पद्मगर्भाभः पुनरेवेदमब्रवीत् ॥६॥

ब्रह्मोवाचः—

व्यक्तिभव महादेव व्यक्तिभव महेश्वरः ॥
त्वं हि नः शरणार्थीनां त्रातातिभुवनेश्वरः ॥७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ पशुपत्यष्टकम्

शंकर त्रिदशनाथ दयालो, भाललोचन हर त्रिपुरारे ॥
अच्युताव्यय कलाधरे मौले, मानसं पशुपतेः हरदुखम् ॥१॥

कालकालकरूणामय शूलिन् कान्तकाय कलिवाशनमूर्तेः ॥
कालकूट कलिताऽसितकण्ठ मानसं पशुपते हर दुःखम् ॥२॥

केशवप्रिय पिशङ्ग कपर्दीन् पार्वतीश्वर पिनाक धरेश ॥
मन्मथ प्रमथ कासविकासिन् मानसं पशुपते हर दुःखम् ॥३॥

कुन्दहोरक सुधाकर गौर निष्कलंक निखिलागम वेद्य ॥
त्र्यक्ष निर्गुण गुणेश्वर जिष्णो मानसं पशुपते हरदुःखम् ॥४॥

पुण्य कीर्त्तन पुराण पुरारे पूर्णरूप पुरूषोत्तम पुण्य ॥
पञ्चवक्त्र पुरूष प्रमथेन्द्र मानसं पशुपते हरदुखम् ॥५॥

भोगिभूषण विभूषित भोग भूतिशोभित तनोहरिकेश ॥
भक्त हृत्कमलवेश्म निवासिन् मानसं पशुपतेहरदुखम् ॥६॥

शुद्धभाव नतकन्धरलोकवृन्द वाञ्छितफलप्रदशम्भो ॥
सृष्टिपालनैक निदान मानसं पशुपतेहरदुखम् ॥७॥

दुष्टनिर्दलन निर्जर देवस्वर्ण दी भुवनशेखर शर्वः ॥
वामदेव मतिगम्य महात्मन् मानसं पशुपतेहरदुःखम् ॥८॥

शंकराष्टकमिदं सुमनोज्ञं रोग शोक कलहार्तिविनाशम् ॥
यः पठेत् सकलवाञ्छित सिद्धिस्तस्यतुष्टइह शंकरदेव ॥९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ पञ्चवक्त्र स्तोत्रम्

संवर्ताऽग्नि तडित्प्रदीप्त कनक प्रस्पर्धितेजो ऽ रूणम् ।
गंभीर ध्वनि सामवेद जनकं ताम्राधरं सुन्दरण् ।।
अर्धेन्दु द्यु ति लोल पिंगल जटाभार प्रबद्धोरगं ।
वन्देसिद्ध सुरासुरेन्द्र नमितं पूर्वं मुखशूलिनं ।।१।।

कालाभ्र भ्रमराञ्जन द्यु तिनिभं व्यावृत्त पिङ्गेक्षणं ।
कर्णोद्भासित भोगिमस्तकमणि प्रोद्भिन्न द्रंष्टांकुरम् ।।
सर्पद्योत कपाल शुक्तिशकल व्याकीर्ण वक्षोरगम् ।
वन्दे दक्षिणमीश्वस्य वदनं चाथर्वनादोदयम् ।।२।।

प्रालेयाऽचल चन्द्रकुन्द धवलं गोक्षीर फेनप्रभम् ।
भष्माभ्यक्तमनङ्ग देहदहन ज्वालावलीलोचनम् ।।
ब्रह्मेन्द्रादि मरूद्गणार्चित पदं ऋग्वेद नादोदयम् ।
वन्दे ऽ हं सकलं कलंक रहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम् ।।३।।

गौरं कुम्कुम पङ्कगन्ध सलिलं व्यापाण्डु गण्डस्थलम् ।
भ्रू विक्षेप कटाक्ष वीक्षण लसत् संसक्त कर्णोत्पलम् ।।
स्निग्धं विम्बफलाधर प्रहसितं नीलालकं सुन्दरम् ।
वन्दे याजुषवेद घोषजनकं वक्त्रंरहस्योत्तमम् ।।४।।

व्यक्ताऽव्यक्त निरूपितं च परमं षट् त्रिंषतत्त्वात्मकं ।
तस्मा दुत्तर तत्वमक्षर पदं ध्येयं सदायोगिभिः ।।
ओंकारादि समस्त मन्त्र जनकं सूक्ष्माति सूक्ष्मत्परं ।
वन्देऽहं परमेश्वरस्य वदनं खम्व्यापि तेजोमयम् ।।५।।

।। इति संक्षिप्त नेपाल माहात्म्य ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ पशुपत्यष्टकम्

शंकर त्रिदशनाथ दयालो, भाललोचन हर त्रिपुरारे ॥
अच्युताव्यय कलाधरे मौले, मानसं पशुपतेः हरदुखम् ॥१॥

कालकालकरूणामय शूलिन् कान्तकाय कलिवाशनमूर्तेः ॥
कालकूट कलिताऽसितकण्ठ मानसं पशुपते हर दुःखम् ॥२॥

केशवप्रिय पिशङ्ग कपर्दीन् पार्वतीश्वर पिनाक धरेश ॥
मन्मथ प्रमथ कासविकासिन् मानसं पशुपते हर दुःखम् ॥३॥

कुन्दहोरक सुधाकर गौर निष्कलंक निखिलागम वेद्य ॥
त्र्यक्ष निर्गुण गुणेश्वर जिष्णो मानसं पशुपते हरदुःखम् ॥४॥

पुण्य कीर्त्तन पुराण पुरारे पूर्णरूप पुरूषोत्तम पुण्य ॥
पञ्चवक्त्र पुरूष प्रमथेन्द्र मानसं पशुपते. हरदुखम् ॥५॥

भोगिभूषण विभूषित भोग भूतिशोभित तनोहरिकेश ॥
भक्त हृत्कमलवेश्म निवासिन् मानसं पशुपतेहरदुखम् ॥६॥

शुद्धभाव नतकन्धरलोकवृन्द वाञ्छितफलप्रदशम्भो ॥
सृष्टिपालनैक निदान मानसं पशुपतेहरदुखम् ॥७॥

दुष्टनिर्दलन निर्जर देवस्वर्ण दी भुवनशेखर शर्वः ॥
वामदेव मतिगम्य महात्मन् मानसं पशुपतेहरदुःखम् ॥८॥

शंकराष्टकमिदं सुमनोज्ञं रोग शोक कलहार्तिविनाशम् ॥
यः पठेत् सकलवाञ्छित सिद्धिस्तस्यतुष्टइह शंकरदेव ॥९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ पञ्चवक्त्र स्तोत्रम्

संवर्ताऽग्नि तडित्प्रदीप्त कनक प्रस्पर्धितेजो ऽ रूणम् ।
गंभीर ध्वनि सामवेद जनकं ताम्राधरं सुन्दरण् ।।
अर्धेन्दु द्यु ति लोल पिंगल जटाभार प्रबद्धोरगं ।
वन्देसिद्ध सुरासुरेन्द्र नमितं पूर्वं मुखशूलिनं ।।१।।

कालाभ्र भ्रमराञ्जन द्यु तिनिभं व्यावृत्त पिङ्गेक्षणं ।
कर्णोद्भासित भोगिमस्तकमणि प्रोद्भिन्न द्रंष्टांकुरम् ।।
सर्पद्योत कपाल शुक्तिशकल व्याकीर्ण वक्षोरगम् ।
वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य वदनं चाथर्वनादोदयम् ।।२।।

प्रालेयाऽचल चन्द्रकुन्द धवलं गोक्षीर फेनप्रभम् ।
भष्माभ्यक्तमनङ्ग देहदहन ज्वालावलीलोचनम् ।।
ब्रह्मेन्द्रादि मरूद्गणार्चित पदं ऋग्वेद नादोदयम् ।
वन्दे ऽ हं सकलं कलंक रहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम् ।।३।।

गौरं कुम्कुम पङ्कगन्ध सलिलं व्यापाण्डु गण्डस्थलम् ।
भ्रू विक्षेप कटाक्ष वीक्षण लसत् संसक्त कर्णोत्पलम् ।।
स्निग्धं विम्बफलाधर प्रहसितं नीलालकं सुन्दरम् ।
वन्दे याजुषवेद घोषजनकं वक्त्रंरहस्योत्तमम् ।।४।।

व्यक्ताऽव्यक्त निरूपितं च परमं षट् त्रिषतत्त्वात्मकं ।
तस्मा दुत्तर तत्वमक्षर पदं ध्येयं सदायोगिभिः ।।
ओंकारादि समस्त मन्त्र जनकं सूक्ष्माति सूक्ष्मत्परं ।
वन्देऽहं परमेश्वरस्य वदनं खम्व्यापि तेजोमयम् ।।५।।

।। इति संक्षिप्त नेपाल माहात्म्य ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: ...

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आवरण मुद्रक : जौहरी प्रिन्टिंग प्रेस •
गदौलिया, वाराणसी • फोन : 66816

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu